

सहज की सौगात

डेरा बाबा जैमल सिंह



सहज की सौगात

सहज की सौगात

डेरा बाबा जैमल सिंह

राधास्वामी सत्संग व्यास

प्रकाशकः
जे. सी. सेठी, सेक्रेटरी
राधास्वामी सत्संग ब्यास
डेरा बाबा जैमल सिंह
पंजाब 143 204

© 2014 राधास्वामी सत्संग ब्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

पहला संस्करण 2014

मुद्रकः रैपलिका प्रैस प्राईवेट लिमिटेड

Translated from the English language edition 'Equilibrium of Love'
© Radha Soami Satsang Beas

Published by:
J. C. Sethi, Secretary
Radha Soami Satsang Beas
Dera Baba Jaimal Singh
Punjab 143 204, India

© 2014 Radha Soami Satsang Beas
All rights reserved

First edition 2014

21 20 19 18 17 16 15 14 8 7 6 5 4 3 2 1

ISBN 978-81-8466-312-9

Printed in India by: Replika Press Pvt. Ltd.

विषय सूची

- ix ब्यास के संत-सतगुरु
xi राधास्वामी सत्संग ब्यास

परिचय ~ 1

आरंभ के कुछ साल ~ 17

डेरा : एक अनुभव ~ 47

48 डेरे में आगमन

70 सत्संग

90 भोजन

142 रहने की व्यवस्था

हर सुख-सुविधा का ध्यान ~ 175

176 सेवादार

186 डेरा-निवासियों की दिनचर्या

222 मूलभूत सुविधाएँ

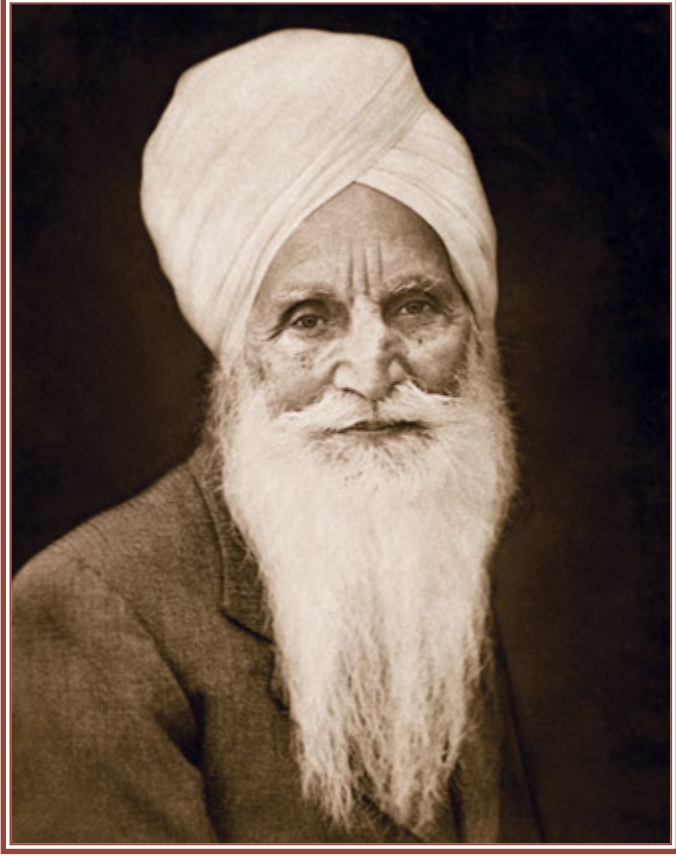
गाथा जारी है ~ 297



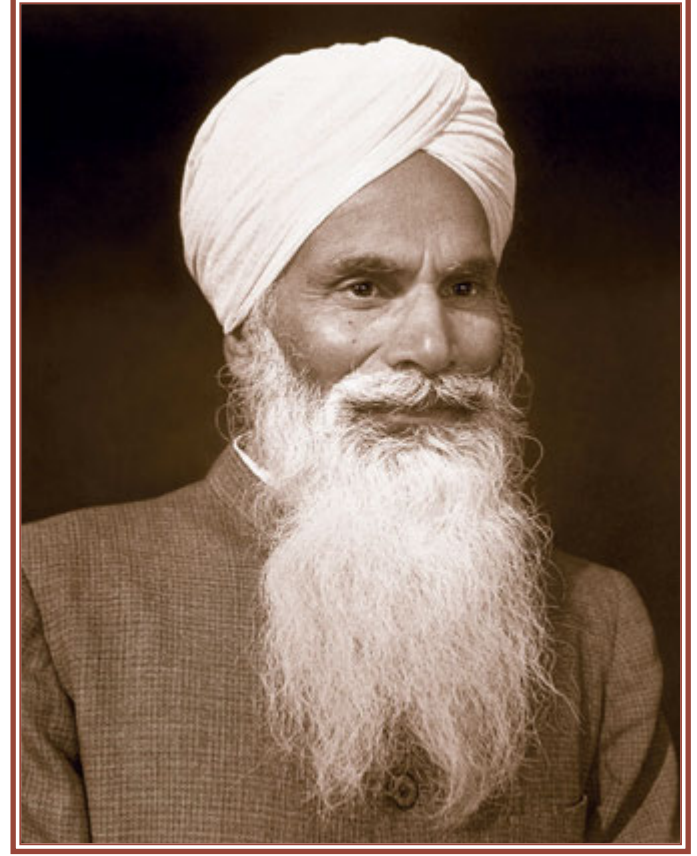
“दूसरों की सेवा में पूरी तरह समर्पित हो जाना ही खुद की पहचान करने का सबसे अच्छा साधन है।”

महात्मा गाँधी

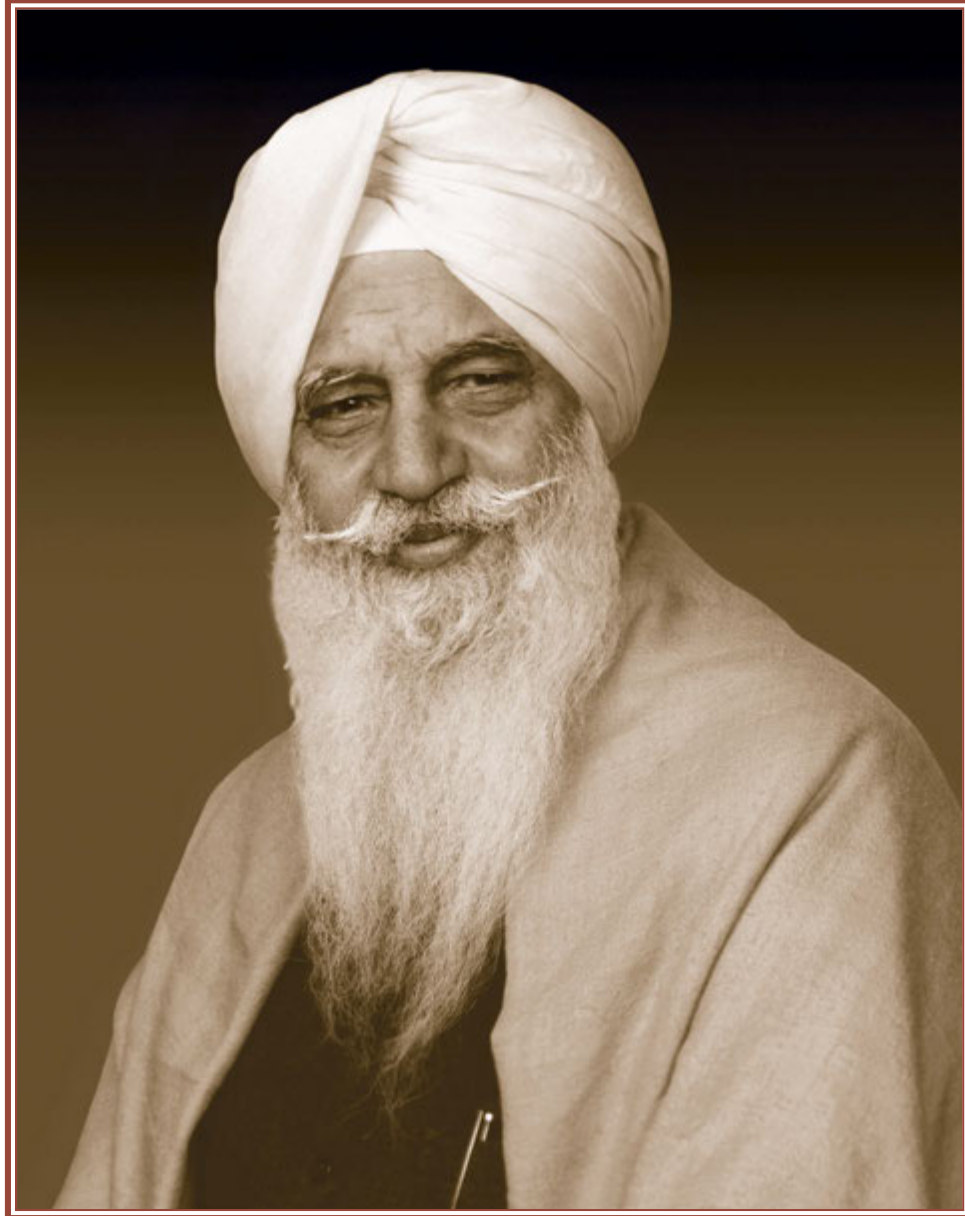
ब्यास के संत-सतगुरु



महाराज सावन सिंह ने 1903 से 1948 तक सतगुरु के रूप में कार्यभार सँभाला। वे एक इंजीनियर के रूप में ब्रिटिश इंडियन मिलिटरी इंजीनियरिंग कोर में कार्यरत रहे। आज हम डेरा ब्यास को जिस तरह एक कालोनी के रूप में विकसित हुआ देखते हैं, उसकी नींव उन्होंने ही रखी। उन्होंने डेरे में सबसे पहला कुँआ खुदवाया और कई इमारतें बनवाईं जिनमें बड़ा सत्संग-घर भी शामिल है। सतगुरु के रूप में उनके लंबे कार्यकाल के दौरान डेरा एक साधारण-सी झोंपड़ी से एक छोटे-से गाँव के रूप में बदल गया।



महाराज जगत सिंह ने 1948 से 1951 तक सतगुरु के रूप में कार्यभार सँभाला। वे रसायनशास्त्र (कैमिस्ट्री) के प्रोफेसर थे और वाइस प्रिंसिपल के पद से रिटायर हुए। देश के बँटवारे के उस मुश्किल दौर में उन्होंने डेरे में बहुत-से शरणार्थियों को आश्रय दिया और उनकी सहायता की। हालाँकि वे डेरे में गुरुगद्दी पर बहुत कम समय के लिए रहे लेकिन उनकी अनुशासनप्रियता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और साथ ही अपार करुणा के लिए उन्हें बड़े प्रेम और श्रद्धा से याद किया जाता है।



महाराज चरन सिंह ने 1951 से 1990 तक सतगुरु के रूप में कार्यभार सँभाला। भारत और विदेशों से लाखों लोग उनका सत्संग सुनने आते थे। उनके मार्गदर्शन में डेरा एक छोटी-सी बस्ती से एक बड़े क़स्बे में विकसित हुआ। एक अनुभवी वकील और किसान होने के नाते उन्होंने डेरे की सारी ज़मीन-जायदाद को अपने एकाधिकार से चेरीटेबल सोसाइटी के नाम स्थानांतरित कर दिया। डेरे की प्रबंध-व्यवस्था आज भी इसी सोसाइटी की देखरेख में चल रही है।

राधास्वामी सत्संग ब्यास

राधास्वामी सत्संग ब्यास का एक चेरीटेबल सोसाइटी के रूप में रजिस्ट्रेशन 11 अक्टूबर, 1957 को सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट के अंतर्गत हुआ। उस समय तक डेरा बाबा जैमल सिंह की ज़मीन-जायदाद और प्रबंध-व्यवस्था पूरी तरह से समय के सतगुरु महाराज चरन सिंह के हाथों में थी। महाराज चरन सिंह खुद एक वकील थे और वे जानते थे कि अब समय आ गया है जब डेरे में चली आ रही पुरानी व्यवस्था के स्थान पर सोसाइटी बनाई जाए, जो अधिक व्यावहारिक हो और जिसे क़ानूनी मान्यता भी प्राप्त हो। सोसाइटी के बनते ही महाराज जी ने सत्संग से संबंधित सारी संपत्ति सोसाइटी के नाम कर दी। ऐसा करने से ज़िम्मेदारियाँ बँट गईं—महाराज जी सोसाइटी के रूहानी प्रमुख और संरक्षक बने और सोसाइटी के सेक्रेटरी और उनकी प्रबंध-समिति ने संपत्ति और उससे संबंधित प्रशासनिक कार्यों की ज़िम्मेदारी सँभाली। इस तरह डेरे को आधुनिक समय में प्रभावशाली ढंग से विकास के मार्ग पर आगे ले जाने की पूरी-पूरी तैयारी कर ली गई।

धरती पर स्वर्ग पुस्तक में इस बात का उल्लेख है कि महाराज चरन सिंह जी ने कहा था कि संत-सतगुरु अपने आप को हमेशा संरक्षक समझते हैं, मालिक नहीं, क्योंकि वे सारी संपत्ति को संगत की धरोहर समझते हैं। वे इसे अपने निजी प्रयोग में कभी नहीं लाते, बल्कि हमेशा संगत के लाभ के लिए और विकास-कार्यों के लिए इसका इस्तेमाल करते हैं। महाराज जी का विचार था कि संगत के लाभ और संपत्ति की बेहतर प्रबंध-व्यवस्था के लिए डेरे के ट्रस्ट को क़ानूनी मान्यता दिलवानी चाहिए। उनका यह भी मानना था कि ऐसी व्यवस्था से उनकी ज़िम्मेदारियों का बोझ भी थोड़ा कम हो जाएगा और संगत की सेवा करने के लिए उन्हें और अधिक समय मिल जाएगा।

इस समय राधास्वामी सत्संग ब्यास का मुख्यालय डेरा बाबा जैमल सिंह है। व्यवस्था के लिए इसे कई विभागों में बाँटा गया है। हर विभाग का एक इंचार्ज और उसका सहायक इंचार्ज है। सोसाइटी और डेरे की कार्य प्रणाली की चर्चा करने तथा उसमें सुधार लाने के लिए डेरे के सभी विभागों के इंचार्ज की नियमित रूप से मीटिंग बुलाई जाती है। प्रबंध-समिति जिसमें अत्यंत महत्वपूर्ण विभागों के प्रमुख तथा सेक्रेटरी शामिल हैं, की उच्चस्तरीय मीटिंग साल में कई बार बुलाई जाती है। इसमें संगत तथा सेवादारों की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए दूरगामी योजनाओं पर विचार-विमर्श किया जाता है।

सत्संग, सेवा और नामदान—ये सोसाइटी के मुख्य उद्देश्य हैं जिन पर सतगुरु पूरा ध्यान देते हैं। इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सेक्रेटरी के नेतृत्व में प्रबंध-समिति यह निश्चित करती है कि सारी व्यवस्था कैसे की जाए। अन्य विषयों के संबंध में भी यही समिति निर्णय लेती है, जैसे कि चीज़ों की क़ीमतें निश्चित करना, दूसरे कार्यों के लिए रेट निश्चित करना और संगत तथा सेवादारों के लिए रियायतों के बारे में निर्णय लेना। समिति हमेशा से संगत तथा सेवादारों को सुख-सुविधाएँ प्रदान करने की प्राथमिकता देती रही है, जैसे स्वास्थ्य की उचित देखभाल, शिक्षा, आवास-सुविधाएँ, बुजुर्गों की देखभाल और व्यवस्था से संबंधित अन्य विषय।

डेरे के अतिरिक्त पूरे भारतवर्ष में लगभग 5000 सत्संग-केंद्र हैं। सोसाइटी का भारतीय सत्संग-केंद्र विभाग एक निश्चित व्यवस्था-क्रम के अनुसार सभी सत्संग-केंद्रों की देखरेख करता है। इस व्यवस्था-क्रम के अनुसार सारे देश को विभिन्न स्तरों में बाँटा गया है—ज़ोनल एरिया, रीजनल एरिया और लोकल सेंटर। भारतवर्ष के अतिरिक्त 90 अन्य देशों में सत्संग होता है। सभी बड़े देशों में व्यवस्था के लिए समितियाँ बनाई गई हैं। बहुत-से देशों में नामदान के लिए सतगुरु ने प्रतिनिधि नियुक्त किए हैं। डेरे का विदेशी सत्संग विभाग विदेशों में होनेवाली सत्संग गतिविधियों की देखरेख करता है। साथ ही यह सुनिश्चित करता है कि विदेशों के ये सत्संग-केंद्र प्रबंध के लिए दिए गए निर्देशों का पूरी तरह पालन करें और सतगुरु द्वारा स्थापित किए गए आदर्शों के अनुरूप प्रेम तथा सेवाभाव से कार्य करें।

सत्संग के कार्यक्रमों में आपसी तालमेल तथा व्यवस्था बनाए रखना सेवादारों के लिए बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। डेरे में आज जिस स्तर पर कार्य हो रहा है वह प्रेम तथा सेवाभाव के बिना और रूहानियत की बख़्शिश करनेवाले सतगुरु के प्रति कृतज्ञता के बिना संभव नहीं है। सतगुरु के लिए प्रेम और निःस्वार्थ सेवा ही सारी कामयाबी की बुनियाद है।

परिचय



“जहाँ संगत है समझो वहीं डेरा है। डेरे से मतलब उस जगह से नहीं है जो ईंट, पत्थर, गारे आदि से बनी है, परमपिता को जानने की जिज्ञासा रखनेवाले मालिक के प्यारे श्रद्धालुओं से डेरा बना है। संगत है तो डेरा है। संगत के बिना डेरे का कोई वजूद नहीं है। इसलिए यह मत सोचो कि सिर्फ़ कुछ इमारतें, कुछ घर या फिर एक कालोनी बनाकर ही डेरे का निर्माण किया जा सकता है। डेरे की पहचान आपका प्यार है, आपका आपसी तालमेल है, आपकी सद्भावना और सहयोग है। यही असली डेरा है।”

महाराज चरन सिंह जी

डेरा बाबा जैमल सिंह रूहानियत से जुड़ी एक ऐसी जगह है जहाँ संगत का आना-जाना लगा रहता है। कुछ लोग यहाँ स्थायी तौर पर भी रहते हैं। सेवा में लगे सभी लोग संतों के रूहानी उपदेश पर अमल करने की कोशिश करते हैं जो कि निःस्वार्थ सेवा और आंतरिक साधना का मार्ग है।

डेरा एक स्थान ही नहीं बल्कि एक धारणा भी है, जिसका संबंध मन की अवस्था से है, हमारे नज़रिये से है। विश्वभर से यहाँ आनेवाले लोगों का उद्देश्य है—आध्यात्मिक मार्गदर्शन और प्रेरणा। वे आपसी प्रेम और सहयोग की भावना के साथ चौबीस घंटे सेवा के लिए तत्पर रहते हैं। कोई उन्हें ऐसा करने के लिए नहीं कहता; वे यह सब इसलिए करते हैं क्योंकि उनके दिल में सतगुरु और संगत की सेवा करने की चाहत है।

राधास्वामी संत-सतगुरुओं की परंपरा में बाबा गुरिन्दर सिंह जी मौजूदा सतगुरु हैं। डेरा-निवासी तथा आनेवाली संगत उनके सत्संग से लाभ उठाते हैं और सतगुरु के प्रति प्रेम और आभार व्यक्त करने के लिए बढ़-चढ़कर सेवा करते हैं। डेरे में रूहानियत का मतलब केवल सिद्धांतों की जानकारी नहीं, बल्कि रूहानियत के उन सिद्धांतों पर अमल करना है।

डेरे के लिए 'आश्रम' शब्द का प्रयोग सही नहीं है क्योंकि यह कोई एकांत स्थान नहीं है, बल्कि डेरा एक पूरा क्रस्वा है जहाँ इतने बड़े पैमाने पर काम होता है कि जिस पर केवल अपनी आँखों से देखकर ही विश्वास किया जा सकता है। लाखों की संख्या में लोग पूरा साल यहाँ पूर्वनिश्चित तिथियों पर सत्संग

सुनने, नामदान प्राप्त करने और सेवा के लिए आते हैं। डेरे के सामने चुनौतीपूर्ण कार्य है—यहाँ आनेवाली संगत की सुख-सुविधा का पूरा-पूरा ध्यान रखना। क्योंकि जब उनकी बाहरी ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं तो वे बेफ़िक्र होकर संत-महात्माओं के उपदेश को गहराई से समझने और आध्यात्मिक परिपूर्णता प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हैं।

इसलिए जहाँ एक ओर डेरे का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति के लिए अनुकूल वातावरण बनाना है, वहीं दूसरी ओर डेरे में संगत की आम ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कम खर्च में मूलभूत सुविधाएँ जुटाना भी है। गाड़ियों की तथा पैदल संगत की संख्या में बढ़ोतरी को देखते हुए भविष्य में कई क्षेत्रों में विकास की महत्वपूर्ण योजनाएँ बनाने की आवश्यकता है, जैसे पार्किंग, भोजनालय, रहने के स्थान, शौचालय और स्नानगृह आदि का निर्माण। इन मूलभूत सुविधाओं में ऊर्जा के अन्य साधनों का इस्तेमाल, कृषि-उत्पादन, स्थानीय पौधों की सहायता से हर ओर हरियाली बनाए रखना, साफ़-सफ़ाई के लिए आधुनिक तकनीक का प्रयोग करना और पानी तथा कूड़े-कचरे के शोधन की प्रक्रिया आदि शामिल हैं। डेरे को आत्मनिर्भर बनाने का लक्ष्य पूरा करने के लिए डेरे में भवन-निर्माण की काफ़ी सामग्री तैयार की जाती है जैसे टाइल, ईंटें, रेलिंग, खिड़कियाँ, दरवाज़े आदि।

अंत में यही कह सकते हैं कि वास्तव में डेरे के विकास और रखरखाव का श्रेय समर्पित सेवादारों के प्रेम और सेवाभाव को ही जाता है।



डेरा लगभग 1900 एकड़ में फैला है, इसके अतिरिक्त 1250 एकड़ ज़मीन का प्रयोग कृषिकार्यों के लिए होता है। स्थायी तौर पर रह रहे निवासियों की संख्या लगभग 7000 है, जिनमें से 1500 सेवादार (और उनके परिवार) सालभर संगत की सेवा करते हैं।

हर साल 19 निर्धारित रविवारों को सतगुरु सत्संग फ़रमाते हैं, उस समय डेरे की आबादी एकाएक दो लाख से पाँच लाख तक बढ़ जाती है। ये लोग केवल हिंदुस्तान से ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व से यहाँ आते हैं। वे यहाँ एक रात से लेकर कुछ सप्ताह तक ठहर सकते हैं। ये लोग अलग-अलग संस्कृतियों, धर्मों और सामाजिक परिवेशों से संबंध रखते हैं; इनका जीवनस्तर भी एक दूसरे से बहुत अलग होता है। इनमें डाक्टर, किसान, प्रोफ़ेसर, टैक्सी ड्राइवर, घर-गृहस्थी वाली महिलाएँ, विद्यार्थी, कंप्यूटर-विशेषज्ञ और मज़दूर आदि सभी शामिल हैं। दूसरे शब्दों में, जीवन के हर क्षेत्र से जुड़े लोग यहाँ आते हैं जिनमें बच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्री-पुरुष तथा अलग-अलग जाति और अलग-अलग देशों के लोग होते हैं। प्रायः हर धर्म के लोग यहाँ आते हैं, क्योंकि इस मार्ग पर चलने के लिए किसी को अपना धर्म नहीं बदलना पड़ता।

यहाँ आनेवाली संगत में से बहुत-से लोग यहाँ सेवा में भाग लेते हैं। वे अपनी-अपनी नौकरी अथवा काम-धंधे से कुछ दिन छुट्टी लेकर, प्रेम और नम्रता के साथ यहाँ कंधे से कंधा मिलाकर सेवा करते हैं। एक गृहस्थी महिला किसी पुस्तक के अनुवाद में सहायता कर सकती है। कोई बैंक कर्मचारी किसी छात्र के साथ मिलकर

सड़क-निर्माण में सहायता कर सकता है। ये सेवादार केवल एक ही उद्देश्य से यहाँ आते हैं और वह है—सर्वोच्च आध्यात्मिक आदर्शों के अनुसार अपने जीवन को कैसे ढाला जाए। संत उपदेश देते हैं कि सेवा का मतलब है अपने स्वार्थ का बलिदान करके नम्रता का पाठ सीखना। सेवादार अपनी शारीरिक क्षमता और रुतबे की परवाह न करते हुए पूरी तरह से अपना समय सेवा में लगाते हैं। उदाहरण के लिए अगर साड़ी बाँधे हुए कोई वैभवशाली महिला सड़क-निर्माण के लिए अपने सिर पर रेत की टोकरी उठाए हुए जा रही है तो इसमें हैरानी वाली कोई बात नहीं है।

लोग यहाँ धन या अनाज जैसे चावल, गेहूँ और सब्ज़ियाँ आदि सेवा में देते हैं। किसान तो यहाँ अपने ट्रैक्टर और दूसरे उपकरण भी ले आते हैं ताकि इनका इस्तेमाल अलग-अलग कार्यों के लिए किया जा सके। धन की सेवा के लिए कोई आग्रह नहीं किया जाता; लोग अपनी इच्छा से जो चाहें सेवा में डालते हैं।

वास्तव में डेरा क़ानूनी रूप से एक निःशुल्क चेरीटेबल सोसाइटी है, जिसे ऐसे धन की सेवा द्वारा ही वित्तीय सहायता प्राप्त होती है। भोजन तथा अन्य ज़रूरी वस्तुएँ और डेरे से प्रकाशित होनेवाली पुस्तकें बाज़ार से बहुत कम मूल्य पर बेची जाती हैं। सतगुरु अपने या अपने परिवार के लिए संगत से कोई उपहार या पैसा नहीं लेते; सेवा में मिली समस्त धनराशि का प्रयोग संगत की सहूलियत के लिए ही किया जाता है।











सत्संग से लौटते हुए।

डेरा : प्रेम की जीती-जागती मिसाल

यहाँ आने पर लोगों की दिनचर्या क्या रहती है? उनके भोजन और रहने की व्यवस्था सुचारू ढंग से कैसे होती है जिसके लिए डेरा प्रसिद्ध है? डेरा अपने मेहमानों और डेरा-निवासियों की ज़रूरतों कैसे पूरी करता है? यही गाथा इस पुस्तक में बताई गई है।

डेरे में आते ही जो बात सबसे पहले हमारा ध्यान खींचती है वह है—इतनी ज़्यादा संगत की देखभाल की व्यवस्था। कोई भी ऐसा पहलू नहीं है जिसकी ओर ध्यान नहीं दिया जाता। एक ही समय में लगभग पाँच लाख संगत के प्रबंध का हर पहलू सुनियोजित होता है और उसे पूरी योग्यता, सामर्थ्य तथा प्रेम से लागू किया जाता है।

उदाहरण के लिए पार्किंग की सुविधा सत्संग-पंडाल के पास ही है, इससे पूरी कालोनी में गाड़ियों की आवाजाही कम रहती है। ख़ूब चौड़ी, आकर्षक साफ़-सुथरी सड़कें और फ़ुटपाथ संगत की भीड़ का बंदोबस्त करने में सहायक हैं। सेवादार पैदल चल रही संगत और आने-जानेवाली गाड़ियों दोनों का संचालन करते हैं। अगर कोई बच्चा अपने परिवार से बिछुड़ जाता है तो उसे उसके माता-पिता तक सुरक्षित पहुँचाने की पूरी-पूरी कोशिश की जाती है। बड़े-बुजुर्गों और शारीरिक रूप से असमर्थ लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। महिलाओं के लिए डेरा विशेष रूप से सुरक्षित स्थान है। कोई भी महिला यहाँ बिना किसी डर के अकेली घूम-फिर सकती है। सड़कों पर रोशनी की अच्छी व्यवस्था है। सेवादार सड़कों पर तथा खुले ग्राउंड में निगरानी के लिए चुपचाप गश्त लगाते रहते हैं।

डेरे के कुछ और महत्त्वपूर्ण पहलू हैं—यहाँ की साफ़-सफ़ाई, डेरे का आर्किटेक्चर तथा यहाँ के प्राकृतिक दृश्यों का अनुपम सौंदर्य। डेरा साफ़-सुथरी, सुंदर और व्यवस्थित जगह है जहाँ आधुनिक सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हैं, साथ ही यहाँ का अपना एक विशेष आकर्षण है। खुले मैदानों में कहीं भी कूड़ा-कचरा नहीं दिखाई देता, बल्कि यहाँ हरे-भरे बगीचे, सुंदर फूल, वृक्ष और झाड़ियाँ (डेरे की अपनी नर्सरी में उगाए गए) सुंदर दृश्य प्रस्तुत करते हैं। डेरे के लगभग आधे भाग में हरे-भरे खुले मैदान हैं जिनसे वातावरण इतना मनोहर हो गया है कि यहाँ बैठकर लोग आराम कर सकते हैं, बच्चे खेल सकते हैं। पूरे डेरे में पीने का ताज़ा पानी उपलब्ध है, साथ ही साथ साफ़-सफ़ाई के आधुनिक तरीके भी मौजूद हैं। सड़कों पर पानी का लगातार छिड़काव होने से धूल बहुत कम उड़ती है। इमारतों का नक्शा इंजीनियर और आर्किटेक्ट तैयार करते हैं जिनमें इनके रख-रखाव की सुविधा के साथ-साथ इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि गर्मी के मौसम में इनमें ज़्यादा से ज़्यादा ठंडक रहे और सर्दी के मौसम में ये गर्म रहें। इनकी निर्माण शैली में पंजाब के गाँव के सीधे-सादे और सुंदर रूप की झलक दिखाई देती है।









सेवादार डेरे में आते हुए।

डेरे का एक और विशेष पहलू यह है कि यहाँ के आदर्शों और सामान्य दिनचर्या से प्रभावित होकर, यहाँ आनेवाली संगत में आत्मसंयम के साथ-साथ अच्छी आदतें भी पनपने लगती हैं। उदाहरण के लिए, सत्संग-पंडाल में प्रवेश करते समय या भोजन परोसे जाने की प्रतीक्षा करते समय कोई भी अपनी क्रतार से बाहर नहीं आता। हर कोई ट्रैफिक के नियमों का पालन करता है जिन्हें बड़ी सख्ती से लागू किया जाता है। गाड़ी चलाते समय कोई भी हार्न नहीं बजाता, यहाँ तक कि साइकिल सवार और रिक्शा चालक भी अपने साइकिल या रिक्शा की घंटी नहीं बजाते। संगत भी डेरे की साफ़-सफ़ाई का ध्यान रखती है। बहुत-से सेवादार डेरे की साफ़-सफ़ाई में लगातार व्यस्त रहते हैं। सबसे खास बात यह है कि डेरे में हर कार्य समय पर किया जाता है। रोज़ाना सत्संग ठीक समय पर शुरू होता है; विभिन्न स्टाल निश्चित समय पर खुलते हैं और निश्चित समय पर बंद होते हैं; सेवादार चाहे स्टाल पर सेवा करते हों या दफ़्तर में, सब समय के बड़े पाबंद हैं। संगत की भारी भीड़ के लगातार आने-जाने और निरंतर चलनेवाली गतिविधियों के बावजूद डेरे में जो शांति का वातावरण है वह इसी सुचारु व्यवस्था के कारण है।

चाहे कोई चुपचाप शाम के समय सैर कर रहा हो या फिर अनगिनत लोगों के साथ क्रदम बढ़ाते हुए जल्दी-जल्दी सत्संग-पंडाल की ओर जा रहा हो, हर कोई यह महसूस करता है कि जिन आदर्शों पर डेरे की नींव रखी गई है, उनकी झलक रूहानी उद्देश्य और बाहरी स्वरूप की हर छोटी-बड़ी बात में दिखाई देती है। उदाहरण के लिए दूरदराज़ के गाँवों से आए हुए हज़ारों परिवार जो बड़े-बड़े शौडों में ज़मीन पर सोते हैं, अपना क्रीमती सामान और रुपये-पैसे कहाँ रखते हैं? यह सामान बिस्तरा शौड में और रुपये-पैसे कैश डिपॉज़िट काउंटर में रखे जाते हैं, जिनकी निगरानी सेवादार बड़ी ज़िम्मेदारी से करते हैं। यहाँ आनेवाला कोई विद्वान या गूढ़ विद्याओं का जिज्ञासु संतमत या परमार्थ के किसी अन्य मार्ग की ओर अधिक जानकारी कैसे प्राप्त कर सकता है? इसके लिए यहाँ एक आधुनिक रिसर्च लाइब्रेरी बनाई गई है, जहाँ प्राचीन समय से लेकर अब तक प्रचलित भिन्न-भिन्न अध्यात्म-मार्गों के बारे में और प्रायः हर धर्म से संबंधित साहित्य उपलब्ध है। आशा है कि यह लाइब्रेरी एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर की लाइब्रेरी के रूप में विकसित हो जाएगी जहाँ पूरे विश्व से विद्वान आने के लिए उत्सुक होंगे। डेरे में आनेवाली संगत के निवास को आरामदायक और सार्थक बनाने के लिए जो सुविधाएँ जुटाई जाती हैं, ऊपर उसके केवल दो उदाहरण दिए गए हैं।

डेरे में आनेवाले हर व्यक्ति का स्वागत है। यहाँ आने की किसी को मनाही नहीं है। सत्संग सुनने के लिए, डेरे की लाइब्रेरी का प्रयोग करने के लिए, लंगर में खाना खाने के लिए, स्नैक बार में बननेवाली चीज़ों का स्वाद लेने के लिए, स्टाल से फल ख़रीदने या चाय पीने के लिए कोई ज़रूरी नहीं है कि वह संतमत का अनुयायी ही हो। जो भी रूहानियत में दिलचस्पी रखते हैं, डेरा उन्हें पूरा सहयोग देता है और साथ ही साथ उनकी सुरक्षा तथा आराम का भी पूरा ध्यान रखता है। विश्व भर से लोग यहाँ एक ही उद्देश्य से आते हैं कि वे संसार के झमेलों से दूर, शांत और गंभीर वातावरण में अपने जीवन के लक्ष्य पर चिंतन कर सकें।









आरंभ के कुछ साल



“बाबा जैमल सिंह और हुजूर महाराज सावन सिंह जी ने डेरे की बुनियाद प्रेम, सेवा, नम्रता और भजन-सिमरन पर रखी थी। कोई अमीर हो या गरीब, स्त्री हो या पुरुष, किसी भी क्रौम, मज़हब या धर्म का क्यों न हो, डेरे में सभी एक समान हैं। यहाँ जात-पात या धर्म-मज़हब का कोई सवाल ही नहीं है। डेरा सभी का साँझा है। हर सत्संगी का है।”

महाराज चरन सिंह जी

डेरे का इतिहास ब्यास के संत-सतगुरुओं के इतिहास से जुड़ा हुआ है। हमेशा से ऐसा होता आया है कि जहाँ भी कोई संत-सतगुरु होते हैं, वहीं अध्यात्म के जिज्ञासु प्रेरणा और पोषण पाने के लिए इकट्ठे हो जाते हैं।

गहमागहमी वाले आज के डेरे की स्थापना उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में ब्यास दरिया के सुनसान किनारे पर हुई। यहाँ एक संत-सतगुरु अकेले कई-कई दिनों तक एक गुफा में भजन में लीन रहते थे। यह संत-सतगुरु बाबा जैमल सिंह (1839-1903) थे जो आगरा के परम संत स्वामी जी महाराज के शिष्य थे। बाबा जैमल सिंह जी अपनी सेना की नौकरी के दौरान छुट्टी लेकर ब्यास दरिया के पश्चिमी किनारे पर इस इलाके में भजन-बंदगी के लिए आते थे और फिर रिटायर होने के बाद स्थायी तौर पर यहाँ आकर रहने लगे। सन 1870 और 1880 के दौरान यह इलाका बड़ा सुनसान था, यहाँ कोई आता-जाता नहीं था। यह इलाका जंगल था जहाँ केवल काँटों से भरे बबूल के पेड़, कँटीली झाड़ियाँ, गहरे खड्ड और घाटियाँ ही थीं। यहाँ साँप, बिच्छू, सियार, गिद्ध और दूसरे जंगली जानवर खुले आम घूमते रहते थे। लोग यहाँ आने से डरते थे, उनका मानना था कि यहाँ भूत-प्रेत रहते हैं, इसलिए वे इस स्थान से दूर ही रहते थे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यहाँ के एकांत के कारण ही बाबा जैमल सिंह जी ने यह स्थान चुना था। सन 1889 में सेना की नौकरी से रिटायर होने के बाद उन्होंने यहाँ पर अपने लिए घास-फूस की कच्ची कोठरी बनाई। उस समय संगत की संख्या बहुत कम थी। एक साल के अंदर ही आसपास के गाँवों में लोगों को बाबा जैमल सिंह जी के बारे में पता चल गया और वे उनके पास आने लगे। तब बाबा जैमल सिंह जी ने अपनी झोंपड़ी के सामने खुले में सत्संग करना शुरू कर दिया।

कुछ साल बाद 1894 में बाबा जैमल सिंह जी ने बाबा सावन सिंह जी को नामदान की बख्शाश की, जो बाद में उनके उत्तराधिकारी बने। उन्हें बड़े महाराज जी के नाम से जाना जाता है। बाबा सावन सिंह जी सिविल इंजीनियर थे। जब उन्होंने देखा कि बाबा जैमल सिंह जी के शिष्य पीने के लिए तथा बाबा जी के स्नान के लिए लगभग एक मील की दूरी से किसी कुँए से पानी लेकर आते हैं जिसका रास्ता घने जंगल से होकर जाता है, तो उन्होंने बाबा जी से झोंपड़ी के नज़दीक कुँआ खुदवाने की विनती की। बाबा जी अंतर्ध्यान हो गए और उसके बाद उन्होंने महाराज सावन सिंह जी को कुँआ बनाने की इजाज़त देते हुए कहा: “ठीक है। इस जगह से बँधने का मेरा कोई इरादा नहीं है, क्योंकि मेरे पास अब ज़्यादा समय नहीं है, लेकिन अब तुम ज़रूर इससे बँध जाओगे।”

कह सकते हैं कि आज के डेरे की स्थापना उसी समय से हुई जब यह कुँआ खोदा गया। बाद में संगत की बढ़ती संख्या को ठहराने के लिए धीरे-धीरे इसी कुँए के आसपास कुछ इमारतों का निर्माण किया गया।

बड़े महाराज जी 1940 के दशक में सत्संग करते हुए।





सत्संग के लिए स्थान

सन 1898 में कुँआ बनवाने के बाद (नीचे दायीं ओर), हुजूर बड़े महाराज जी को सत्संग के लिए एक छोटा-सा कमरा बनवाने की भी इजाज़त मिल गई ताकि लोगों को बारिश तथा गर्मी से राहत मिल सके। पहले एक कमरा 30x15 फुट के माप का बनाया गया जिसमें पचास-साठ आदमी बैठ सकते थे। उन दिनों यह कमरा भी पूरी तरह नहीं भरता था। बाद में संगत के लिए कुछ कमरे बनवाए गए ताकि लोग यहाँ रात को ठहर सकें। जब संगत की संख्या बढ़ने लगी तो एक बड़ा हाल बनवाया गया जिसे नामघर कहा गया।

बाबा जैमल सिंह जी ने 1903 में चोला छोड़ने से पहले 2000 से अधिक व्यक्तियों को नामदान की बख्शिशा की थी। उस समय डेरे में भंडारे के समय लगभग 150 व्यक्ति इकट्ठे होते थे और स्त्री-पुरुष सभी के बैठने के लिए एक छोटा-सा हाल ही काफ़ी था। धीरे-धीरे जब भंडारे के समय संगत और अधिक आने लगी तो नामघर के इर्दगिर्द एक बरामदा भी बनवाया गया। बड़े महाराज जी वहीं बैठकर कुँए के चारों ओर बने अहाते में बैठी संगत के

लिए सत्संग करते थे। बाद में नामघर के पास सत्संग के लिए एक और बड़ा हाल बनवाया गया।

उन दिनों डेरे का विस्तार केवल कुँए के आसपास का आँगन और उसके इर्दगिर्द बनी इमारतों के छोटे-से अहाते तक ही था। ये इमारतें कुछ प्रेमी सत्संगियों ने बनवायी थीं। समय बीतने पर जैसे-जैसे हुजूर महाराज जी ने हिंदुस्तान और उन इलाकों में जो अब पाकिस्तान में हैं, वहाँ के गाँवों और शहरों की यात्राएँ आरंभ की, तो डेरे में ज़्यादा से ज़्यादा जिज्ञासु आने लगे और कुछ तो यहीं पर रहना चाहते थे। तब यहाँ स्थायी रूप से रहनेवालों के लिए तथा संगत के रहने का प्रबंध किया गया। दोनों सत्संग हाल भी संगत के लिए कम पड़ गए थे। यहाँ तक कि वह आँगन भी जहाँ लोग बैठकर सत्संग सुनते थे, संगत के लिए बहुत छोटा पड़ रहा था। शुरुआत के इस दौर में संगत के लिए सर्दी-गर्मी से बचने का कोई साधन नहीं था, इसलिए सत्संग तथा रहने के लिए ऐसी इमारतों का निर्माण करना ज़रूरी हो गया।



आखिर 1934 में हुजूर बड़े महाराज जी ने एक नए सत्संग-घर के निर्माण की इजाज़त दे दी। यह एक बहुत बड़ी शानदार इमारत है जिसकी बनावट में प्राचीन और मध्यकाल के लोकप्रिय भवन-निर्माण शैलियों की झलक दिखाई देती है। इस नए सत्संग-घर का निर्माण कार्य तीन वर्ष में पूरा हुआ। इसका नक्शा बनाते समय, कई इंजीनियर और आर्किटेक्ट जो महाराज सावन सिंह जी के शिष्य भी थे, उनके सामने कई नक्शे बनाकर लाए परंतु उन्होंने किसी को भी मंजूरी नहीं दी। चूँकि वे स्वयं इंजीनियर थे, इसलिए उन्होंने खुद इसकी योजना बनाई। उन्होंने इस भवन को अंग्रेज़ी भाषा के 'I' अक्षर का आकार दिया, ताकि 'I' की ऊपरी लाइन के मध्य बने मंच पर बैठकर जब वे सत्संग करें तो तीनों ओर बैठी संगत को उनके दर्शन हो सकें।

वे चाहते थे कि इस इमारत की बनावट एकदम साधारण हो, इसके कोई कँगूरे या मीनार वगैरा न हों, परंतु सेवादारों के निवेदन करने पर आखिर वे इसे एक भव्य रूप देने के लिए राज़ी हो गए।

संगत की संख्या दिनो-दिन बढ़ती ही जा रही थी। इसलिए 1984 में हुजूर महाराज चरन सिंह जी के निर्देश अनुसार लोहे की चौखटों का इस्तेमाल करके एक बहुत बड़ा मल्टीपरपज़ शैड बनाया गया जिसका फ़र्श मिट्टी का था, छत हलकी-फुलकी थी और सीमेंट की आधी-आधी जालीदार दीवारें थीं। ख़राब मौसम में सत्संग की व्यवस्था करने के लिए बनाए गए इस शैड में लगभग 90,000 लोगों के बैठने की सुविधा थी।

सन 1990 में बाबा गुरिंदर सिंह जी द्वारा सतगुरु के रूप में कार्यभार सँभालने के बाद संगत की संख्या में और बढ़ोतरी हुई, इसलिए ब्यास दरिया की ओर ढलान वाले क्षेत्र में एक सत्संग शैड का निर्माण किया गया जिसका इस समय भी प्रयोग हो रहा है। कई चरणों में इसका विस्तार किया गया और आज इसके नीचे लगभग पाँच लाख संगत के बैठने की सुविधा है। (शैड तथा इसके पीछे शामियानों से ढके हुए स्थान को मिलाकर लगभग सात से आठ लाख तक संगत के बैठने की सुविधा है।)





ऊपर: बड़े महाराज जी द्वारा बनवाया गया 55x20 फुट का पहला नामघर जिसमें 150 व्यक्ति बैठ सकते थे।
नीचे: आँगन में बाद में बना बड़ा सत्संग हाल जो जल्द ही छोटा पड़ गया।






ऊपर: सत्संग-घर निर्माण के समय, 1936
नीचे: हुजूर बड़े महाराज जी सत्संग से लौटते समय।







फिर यहाँ बड़ा सत्संग-घर बनाया गया जिसमें लगभग 2,200 की संख्या में संगत के बैठने की सुविधा थी, लेकिन 1937 में जब इसका निर्माण कार्य पूरा हुआ उस समय तक मासिक सत्संगों में आनेवाली संगत की संख्या उम्मीद से अधिक बढ़ चुकी थी। यह बात तो साफ़ थी कि बढ़ती हुई संगत के लिए यह नया हाल भी बहुत छोटा पड़ गया है। इसलिए हुजूर बड़े महाराज जी ने केवल नामदान के लिए इसे इस्तेमाल करने का निर्णय लिया; और सत्संगों की व्यवस्था फिर से बाहर खुले मैदानों में की जाने लगी।

एक अवसर पर हुजूर बड़े महाराज जी ने फ़रमाया था कि आनेवाले समय में सत्संग खुले मैदानों में ही करने पड़ेंगे, क्योंकि कोई भी हाल सत्संग में आनेवाली संगत को बिठाने के लिए पर्याप्त नहीं होगा। कई वर्षों तक सत्संग-घर के पीछे खुले मैदान में शामियाने लगाकर सत्संग का प्रबंध किया जाता रहा ताकि लोगों का बारिश और धूप से बचाव हो।





बायें: बड़े महाराज जी 1940 के दशक में पुरानी लाइब्रेरी के बरामदे में सत्संग करते हुए।
ऊपर: महाराज चरन सिंह जी 1960 के दशक में उसी स्थान पर सत्संग करते हुए।

संगत के लिए भोजन की व्यवस्था

डेरे में सत्संग सुनने के लिए आई संगत के लिए भोजन की व्यवस्था भी ज़रूरी है। इसी लिए यहाँ हमेशा से लंगर चलता आ रहा है। बाबा जैमल सिंह जी ने 1890 में सबसे पहले यहाँ लंगर शुरू करवाया और तब से यहाँ लगातार लंगर चल रहा है। शुरू में लंगर बाबा जैमल सिंह जी की कोठरी के सामने था। उस समय दाल, सब्जी और ईंधन आसपास के गाँवों से खरीदे जाते थे।

पिछले 100 वर्षों से भी अधिक समय से बड़ी संख्या में लोग लंगर में आते रहे हैं, लेकिन कभी भी भोजन की कमी नहीं हुई, न ही कभी ऐसा अवसर आया जब लंगर के लिए संगत से रुपये-पैसे की माँग की गई हो। हुजूर बड़े महाराज जी सेवादारों को हिदायत देते थे कि वे संगत को 'बड़े प्रेम से और खुले दिल से भोजन परोसें, क्योंकि बाबा जैमल सिंह जी का भंडार अनंत है।'

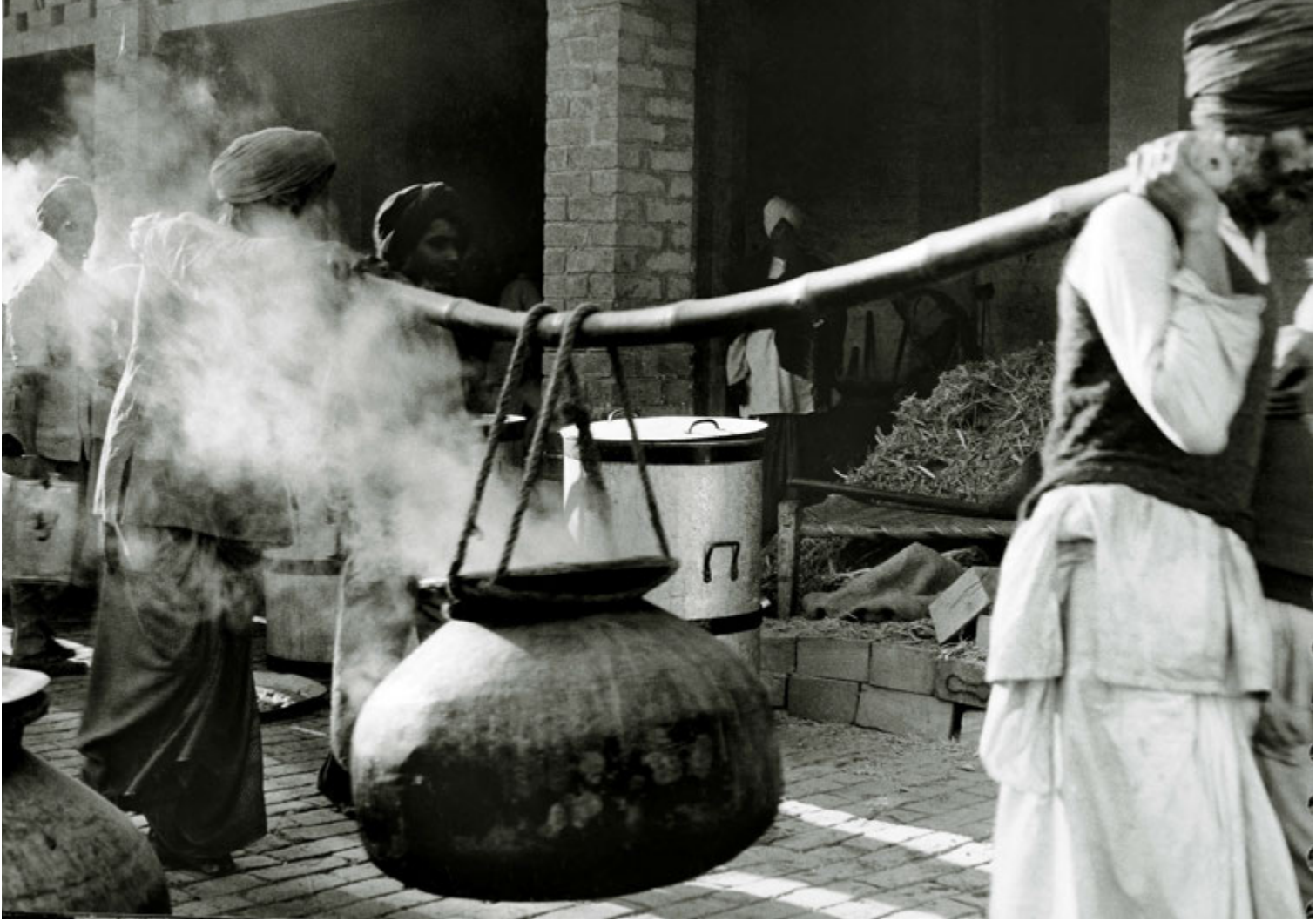
हुजूर बड़े महाराज जी के समय शुरू-शुरू में लंगर उनकी कोठी के आँगन में खिलाया जाता था और पास में ही लंगर पकाया भी जाता था। उस समय बिजली की कोई सुविधा नहीं थी, सारा भोजन आग जलाकर पकाया जाता था; लोहे के बड़े-बड़े कड़ाहों में दाल और सब्जी बनाई जाती थी और रोशनी के लिए लैंप जलाए जाते थे। रोटियाँ बनाने के लिए तवे भी थोड़े-से ही थे।

इससे पहले बाबा जैमल सिंह जी के समय भंडारों के अवसर

पर ज़्यादा से ज़्यादा सौ लोगों के भोजन और रहने की व्यवस्था करने की ज़रूरत पड़ती थी। फिर हुजूर बड़े महाराज जी के समय इन अवसरों पर संगत की संख्या 30,000 तक हो गई। संगत की संख्या इतनी तेज़ी से बढ़ी कि सारी सुविधाएँ कम पड़ गईं, इसलिए लंगर का विस्तार करना पड़ा। 1950 के आरंभ में, भंडारों के अवसर पर संगत की संख्या एकाएक 50,000 हो गई। चूँकि एक बार में 3000-4000 की संख्या में ही संगत को खाना खिलाया जा सकता था, इसलिए लंगर चौबीस घंटे चलता रहता ताकि सबको बारी-बारी से खाना खिलाया जा सके।

महाराज जगत सिंह जी (1948-1951) के समय डेरे में आनेवाली संगत की संख्या पहले जैसी ही रही, लेकिन देश के बँटवारे के दौरान पाकिस्तान से आनेवाले बहुत-से शरणार्थियों को डेरे में आश्रय दिया गया और उनके लिए लंगर की व्यवस्था भी की गई। सन 1951 में महाराज जगत सिंह जी के चोला छोड़ने के बाद, हुजूर महाराज चरन सिंह जी के समय लंगर में भोजन करनेवालों की संख्या बहुत बढ़ गई थी, इसलिए लंगर में कई महत्वपूर्ण बदलाव किए गए। (आज लंगर में 50,000 व्यक्तियों को एक साथ बिठाकर खाना खिलाया जा सकता है और 3,00,000 व्यक्तियों के लिए एक वक्रत का खाना परोसा जा सकता है।)





बायें: बड़े महाराज जी लंगर में दर्शन देते हुए।
ऊपर: शुरू-शुरू में लंगर में खाना तैयार करते हुए।

महाराज चरन सिंह जी जब गद्दी पर बैठे तब शुरू-शुरू में एक रात लंगर में चल रहे कामकाज के शोरगुल के कारण वे 2.30 बजे तक जागते रहे। उन्होंने देखा कि संगत उस समय भी खाना खा रही थी और हज़ारों की संख्या में लोग खाना खाने के लिए इंतज़ार कर रहे थे। महाराज जी यह देखकर बहुत परेशान हो गए कि उनकी संगत को खाना खाने के लिए रात के 2 या 3 बजे तक इंतज़ार करना पड़ता है। जैसा कि उन्होंने बाद में स्पष्ट किया: “1955 में लंगर के लिए जगह बहुत कम थी और लंगर का एक ही छोटा-सा गेट था। उस समय भी हुज़ूर बड़े महाराज जी के जन्मदिन वाले भंडारे पर दो लाख के करीब संगत डेरे में इकट्ठी होती थी। संगत इतनी ज़्यादा आ जाती थी कि रात 2 बजे तक भी उन्हें खाना खिलाने का कार्य चलता रहता। मैं अपने कमरे में बेचैनी से बैठा सोचता था कि हुज़ूर बड़े महाराज जी की याद में यहाँ इकट्ठी हुई संगत का ध्यान कैसे रखा जाए।”

हुज़ूर महाराज चरन सिंह जी लंगर का इतना विस्तार करना चाहते थे कि कम से कम 20,000 लोग एक ही पंगत में खाना खा सकें, ताकि 50,000 तक की संगत को खाना खिलाने में तीन घंटे से ज़्यादा समय न लगे। लंगर के तीनों तरफ़ डेरे की अन्य इमारतें थीं, इसलिए इसका विस्तार केवल पूर्व की ओर हो सकता था जहाँ धँसी हुई दलदली ज़मीन थी। उन्होंने देखा कि लंगर का विस्तार करने का केवल एक ही तरीका है और वह है-खाइयों को भरना और ज़मीन को समतल करना। डेरा की प्रबंध-समिति ऐसा करने से हिचकिचा रही थी, क्योंकि उन्हें लग रहा था कि खाइयाँ बहुत चौड़ी और गहरी हैं और उन्हें भरकर समतल करना कोई आसान काम नहीं है। उनका कहना

था कि अगर यह काम शुरू कर लिया जाए तो इसे पूरा करने में 10 से 12 साल तक का समय लग सकता है। महाराज जी ने जवाब दिया, “इस काम में चाहे दस साल ही क्यों न लगे, कम से कम उस समय तो संगत आराम से खाना खाएगी।”

महाराज जी ने सत्संग में यह घोषणा कर दी कि खाइयों को भरने की सेवा की जाएगी। इस सेवा कार्य को ‘मिट्टी सेवा’ कहा जाने लगा। हर कोई अपनी खाली टोकरी को मिट्टी से भरकर सिर पर उठाता और इस मिट्टी को खाई में डाल आता था।

मिट्टी सेवा में लगी हुई संगत का उत्साह बढ़ाने के लिए महाराज जी सुबह-शाम दो बार उन्हें दर्शन देने जाते थे। धीरे-धीरे और ज़्यादा लोग इस सेवा में शामिल होने लगे और भंडारे के अवसर पर तो कई बार 10,000 तक संगत मिट्टी सेवा में भाग लेती थी। कुछ ही दिनों में बड़े-बड़े टीले खत्म हो गए। गहरी खाइयाँ समतल ज़मीन में बदल गईं। बच्चे-बूढ़े, अमीर-गरीब, तंदुरुस्त और कमज़ोर, जिज्ञासु और सत्संगी सारी संगत कंधे से कंधा मिलाकर इस सेवा में जुट जाती। इस तरह मिट्टी सेवा उस समय डेरे का एक अहम हिस्सा बन गई थी।

आखिरकार दो वर्षों में ही संगत दस लाख क्यूबिक फुट मिट्टी भरने में सफल हो गई और इस तरह ज़मीन समतल हो गई। महाराज जी के दृढ़ निश्चय और संगत की सेवा से लंगर का धीरे-धीरे विस्तार होता गया। खाइयों को समतल करने से और दरिया के रास्ता बदलने पर प्राप्त हुई दलदली ज़मीन से लंगर पकाने तथा संगत को बिठाने के लिए काफ़ी ज़मीन उपलब्ध हो गई।





मिट्टी सेवा: लंगर के विस्तार के लिए खाइयों को भरते हुए।

एक बार जब महाराज जी अपनी प्रबंध-समिति के साथ लंगर के विस्तार की ज़रूरत पर चर्चा कर रहे थे तो उन्होंने कहा कि संगत को कभी भी असुविधा नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा, “हमें उनकी ज़रूरत को पूरा करना ही है। हम यहाँ किसलिए हैं? हम उन्हें ऐसा क्यों कहें, ‘यहाँ मत आओ क्योंकि हम आपको खाना नहीं खिला सकते।’ हमें इस स्थिति से निपटना होगा और उन्हें खाना खिलाने की व्यवस्था करनी ही होगी।”

उनकी ऐसी सोच और अपार दया, लंगर में एक और ही महत्त्वपूर्ण ढंग से सामने आई। हुजूर महाराज चरन सिंह जी अपने प्रभाव से डेरे में सामाजिक बदलाव लाने में सफल हुए, जो संगत के सामने प्रेम और समानता के भाव की मिसाल बन गई। यह बदलाव न केवल डेरे का ही, बल्कि कहीं भी किसी भी समय में इस संसार में आनेवाले पूर्ण संत-महात्माओं के उपदेश का एक मूल सिद्धांत है। लंगर ऐसी जगह है जहाँ सभी एकसाथ बैठकर खाना खा सकते हैं, चाहे कोई किसी भी धर्म या जाति से क्यों न संबंध रखता हो या फिर स्त्री हो या पुरुष। परंतु हुजूर महाराज चरन सिंह के समय (1950 के दशक में) शुरू-शुरू में एक दिन जब वे लंगर में गए

तो यह देखकर बहुत परेशान हुए कि हिंदुस्तान में जाति-प्रथा को ग़ैरक़ानूनी घोषित कर देने के बावजूद लंगर में निम्न जाति की संगत एक समूह में इकट्ठी होकर दूसरी जातियों की संगत से अलग पंगत में बैठती थी। महाराज जी निम्न जाति वाली संगत के बीच जाकर बैठ गए, उनके साथ डेरा के कई और खास प्रबंधकर्ता भी बैठ गए। हुजूर महाराज चरन सिंह जी की इस प्रेमपूर्ण मिसाल के कारण उस दिन से सभी वर्गों के लोग लंगर में साथ मिलकर खाना तैयार करते हैं और इकट्ठे बैठकर खाते हैं।

चूँकि संगत की संख्या में बढ़ोतरी होती जा रही है, इसलिए अब लंगर का और भी विस्तार किया गया है; संगत की बढ़ती ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कुछ मशीनों का भी प्रयोग किया जाने लगा है, परंतु परंपरा से चली आ रही हाथों से की जानेवाली सेवा पहले की तरह अब भी चल रही है। लंगर में यह नियम अटल है कि वहाँ हमेशा सबके लिए पर्याप्त भोजन उपलब्ध है।

दायें: महाराज चरन सिंह जी लंगर में खाने की जाँच करते हुए।
नीचे: लंगर में सब इकट्ठे बैठकर खाते हुए।





रहने की सुविधा

बात चाहे उन्नीसवीं सदी में बाबा जैमल सिंह जी की संगत के रहने के प्रबंध की हो, या फिर 21वीं सदी में मौजूदा सतगुरु बाबा गुरिन्दर सिंह जी के सत्संग में लाखों की संख्या में आनेवाली संगत के रहने की हो, डेरे में शुरू से ही विकास कार्य कभी भी नहीं रुका है।

युद्ध के कारण या देश में अशांति के कारण अपने घरों से बेघर हुए शरणार्थियों के लिए डेरे के दरवाज़े हमेशा खुले रहे हैं। देश के बँटवारे के बाद 1947 और 1955 के बीच पाकिस्तान से भारत आनेवाले और भारत से पाकिस्तान जानेवाले परिवारों ने तब तक यहाँ आश्रय लिया जब तक वे कहीं और जाकर बस नहीं गए। 1980 के दशक में जब पंजाब में आतंकवाद बहुत बढ़ गया था, उस समय भी सैकड़ों हिंदू, मुसलमान और सिक्खों ने यहाँ शरण ली।

बाबा जैमल सिंह जी के समय में रहने के लिए जगह बहुत कम थी। अगर लोगों को सोने के लिए बरामदे में जगह मिल जाती तो वे अपने आप को खुशकिस्मत समझते थे। ज़्यादातर लोग खुले में ही सोते थे और उनके लिए गर्मी, सर्दी तथा बारिश से बचाव का कोई साधन नहीं था। सन 1900 के आरंभ में छोटे सत्संग हाल के

पास दो मंज़िला इमारत बनवाई जिसे नौ कोठरियों के नाम से जाता है। इस इमारत की निचली मंज़िल में पाँच कमरे थे और ऊपरी मंज़िल पर चार और हर कमरे में छः लोगों के सोने की सुविधा थी। बाद में यहाँ सीढ़ियों को ढककर दसवाँ कमरा बनाया गया।

हुज़ूर महाराज सावन सिंह जी के गद्दीनशीन होने के शुरुआती दौर में यह छोटी-सी जगह ही डेरा बाबा जैमल सिंह के नाम से जानी जाती थी, जहाँ दो छोटे सत्संग हाल और एक गेस्ट हाउस था। पास में एक कुँआ और आँगन था।

सरकारी अफ़सर भी यहाँ इसी छोटे-से गेस्ट हाउस में ज़मीन पर ही सोते थे। बिजली की कोई सुविधा नहीं थी, केवल तेल वाले लैंप और मोमबत्तियाँ ही रोशनी के लिए इस्तेमाल की जाती थीं। स्नानगृह आदि की कोई सुविधा नहीं थी, सारी संगत नहाने के लिए दरिया पर जाती थी जो इतना नज़दीक था कि डेरे में हर जगह बहते पानी की आवाज़ सुनाई देती थी।

सन 1911 से 1932 तक बहुत-सी नई इमारतें और रहने के लिए घर बनवाए गए। ये अधिकतर ईंटों से बनीं साधारण इमारतें थीं। इनका रखरखाव इनमें रहनेवाले सेवादार खुद ही करते थे। मेहमान भी यहीं ठहरा करते थे।







पुराने डेरे के बीचोबीच बनी गुंबदवाली लाइब्रेरी।



हेरिटेज स्क्वेअर (ऐतिहासिक इलाक़ा)

हुज़ूर बड़े महाराज जी ने खुद डेरे में बननेवाली नई इमारतों की योजना बनाई और अपनी देखरेख में उनका निर्माण कार्य करवाया। वे कारीगरों और इंजीनियरों को खुद हिदायतें देते और हर छोटी से छोटी बात की ओर ध्यान देते (जैसा कि उनसे पहले उनके सतगुरु करते थे)। आज डेरे का जो स्वरूप हमारे सामने है, शुरू-शुरू में उसके विकास कार्य की योजना बनानेवाले और आर्किटेक्ट स्वयं बड़े महाराज जी थे।

बड़े महाराज जी ने निजी खर्च से सन 1916 में रहने के लिए एक विशाल और सुंदर दो मंज़िला ईंटों की इमारत बनवाई। यह ख़ास इमारत आज भी मौजूद है। बाद में यह इमारत किसी का भी निजी आवास नहीं रही, बल्कि कई सालों तक इसे लाइब्रेरी और रीडिंग रूम के रूप में इस्तेमाल किया गया, यहाँ तक कि भंडार-घर के रूप में भी इसका प्रयोग हुआ। इन दिनों यहाँ सेवादार ठहरते हैं।

सन 1923 में हुज़ूर बड़े महाराज जी ने बाबा जैमल सिंह के 8x10 फ़ुट के कमरे के साथ ही अपने लिए एक तीन मंज़िला कोठी बनवाई, जो पहले से बने कुँए की बग़ल में थी। अब हुज़ूर बड़े महाराज जी की कोठी को सुधारकर नया रूप दिया गया है। यह 'हेरिटेज स्क्वेअर' कहे जानेवाले ऐतिहासिक इलाक़े का ख़ास हिस्सा है जिसमें सबसे पहला कुँआ और डेरे की सबसे पुरानी इमारतें शामिल हैं।

सन 1930 से 1940 के बीच डेरे में सौ से भी अधिक घर बनाए गए जिससे डेरे ने एक कालोनी का रूप ले लिया। जिन सत्संगियों को पुराना समय याद है वे इस इलाक़े को 'पुराना डेरा' कहकर पुकारते हैं।



बड़े महाराज जी की कोठी।



हेरिटेज स्क्वेअर (ऐतिहासिक इलाक़े का आज का स्वरूप)

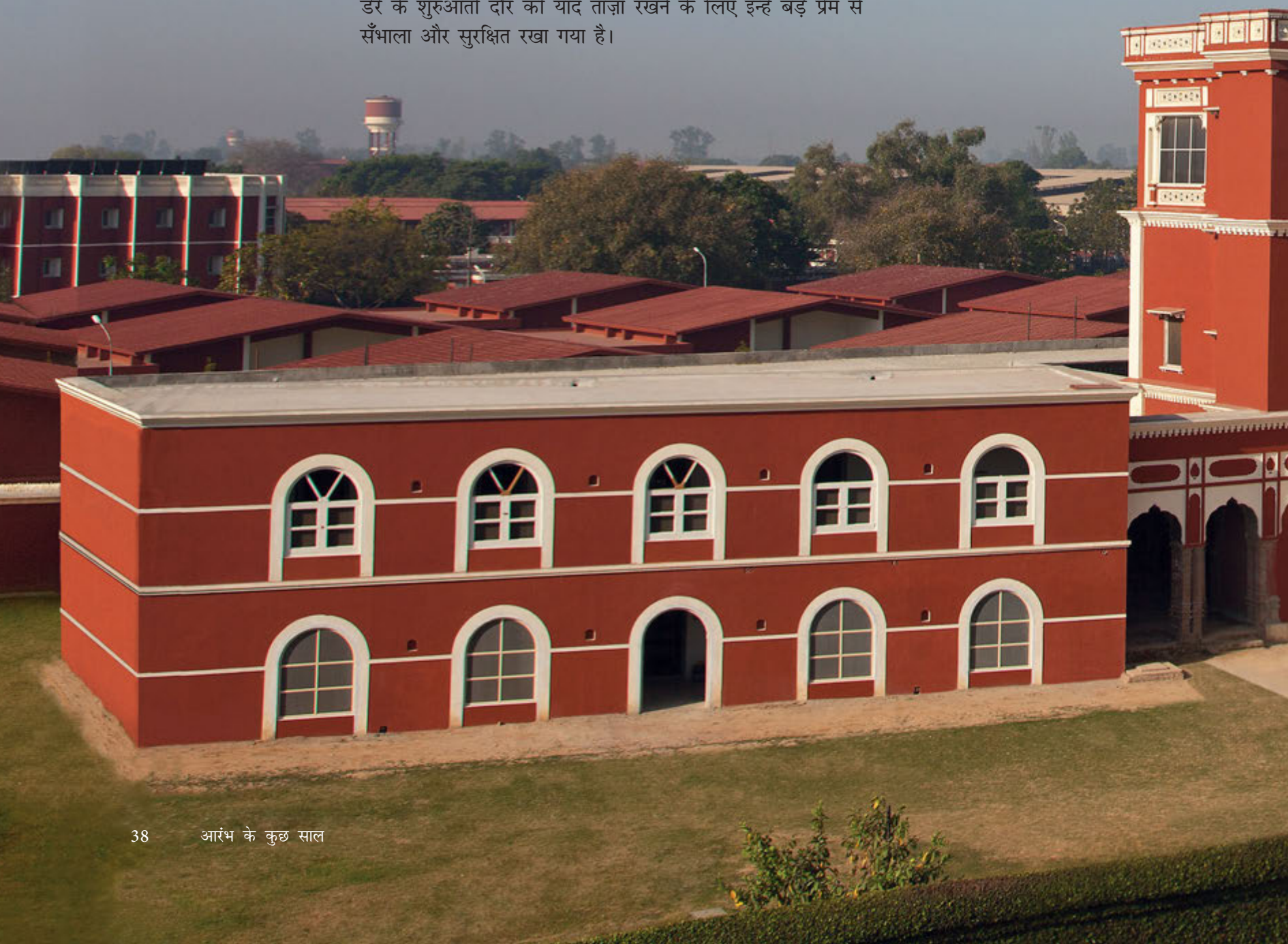


कुँआ और पुराना सत्संग-घर।



पुराने सत्संग-घर से दृश्य।

डेरे का अहम हिस्सा जहाँ बड़े महाराज जी ने अपनी कोठी, कुँआ, ठहरने के लिए कुछ कमरे और दो छोटे सत्संग हाल बनवाए थे। डेरे के शुरुआती दौर की याद ताज़ा रखने के लिए इन्हें बड़े प्रेम से सँभाला और सुरक्षित रखा गया है।





अमरीका के एक सत्संगी डॉ. जूलियन जॉनसन के लिए 1930 के दशक में बनवाया गया घर जहाँ अब महाराज चरन सिंह जी का परिवार रहता है।

शुरू-शुरू में बना एक गेस्ट हाउस जिसे हाल ही में ठीक करवाया गया।







बाबा जी की कोठी का गेट।

संगत की बढ़ती हुई संख्या

डेरे को एक आधुनिक कालोनी का रूप देने के लिए सौ वर्षों से भी अधिक समय से सेवादारों ने यहाँ लगातार सेवा की है जिसमें खाइयों की भराई, ज़मीन को समतल करना, सड़कें बनाना और संगत की बढ़ती हुई संख्या के लिए मूलभूत सुविधाएँ (साफ़ पानी, जल-निकास, बिजली आदि) जुटाना शामिल हैं। डेरे का आरंभ से आज तक जो इतना विकास हुआ है, यह सब सेवा का ही परिणाम है। सन 1951 में हुज़ूर महाराज चरन सिंह के गद्दीनशीन होने के बाद डेरे का विकास कार्य तेज़ी से हुआ, साथ ही आनेवाली संगत और यहाँ स्थायी रूप से रहनेवाले लोगों की संख्या में बढ़ोतरी होती गई। डेरे के आधुनिक स्वरूप के निर्माता महाराज जी ही हैं। उन्होंने ऐसी व्यवस्था की ताकि डेरे के विकास के लिए चलनेवाले सभी निर्माण कार्यों में सारी संगत भाग ले सके। डेरे का तेज़ी से विकास होने से यहाँ का माहौल भी बदल गया। डेरा एक दूरदराज़ के शांत गाँव से बदलकर चहल-पहल से भरा एक सुंदर क़स्बा बन गया जहाँ खेतीबाड़ी के लिए ज़मीन थी और कुछ दुकानें भी थीं जिनमें ज़रूरत का सारा सामान उपलब्ध था।

1950 के दशक में पानी की ज़रूरत और गंदे पानी के निकास की व्यवस्था के साथ-साथ डेरे में बिजली लाने का प्रबंध भी किया गया। पानी का प्रबंध हो जाने से यहाँ बड़े-बड़े लॉन और बगीचे बनाए गए। धीरे-धीरे यह कालोनी फूल-पौधों, वृक्षों और हरी-भरी झाड़ियों से लहलहाने लगी। ये सभी पेड़-पौधे डेरे की नर्सरी में ही उगाए जाते थे। मकान, दफ़्तर, गेस्ट हाउस और सड़कों के निर्माण के साथ-साथ पूरी कालोनी में आराम के लिए छायादार हरे-भरे मैदान बनाए गए और साथ ही प्राकृतिक सौंदर्य पर पूरा-पूरा ध्यान दिया गया।

1960 के दशक में डेरे में स्थायी तौर पर सेवा करनेवाले सेवादारों के रहने के लिए घर बनवाए गए। जैसे-जैसे समय बीतता गया, ज़्यादा से ज़्यादा सेवादार यहाँ पक्के तौर पर रहने के लिए आने लगे, इसलिए सभी आधुनिक सुविधाओं से युक्त कुछ और घर बनवाए गए। इस समय तक विदेश से आनेवाली संगत की संख्या भी बढ़ने लगी थी। वैसे तो पश्चिमी देशों से लोग हुज़ूर बड़े महाराज जी के समय से ही डेरे में आने लगे थे, परंतु 1950 के शुरू तक उनके रहने के लिए एक ही गेस्ट हाउस था जिसमें केवल चार कमरे थे।

महाराज चरन सिंह जी 1960 के दशक में नए घरों का निरीक्षण करते हुए।



उस समय संगत के रहने के लिए कोई खास सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं। बेशक डेरे में बिजली का प्रबंध हो गया था परंतु बिजली अकसर होती ही नहीं थी; पानी के लिए नल नहीं थे, इसलिए नहाने के लिए सुबह-सुबह कमरों में पानी पहुँचाया जाता था। 1955 के आसपास अमरीका, यूरोप और साउथ अफ्रीका से डेरे में और ज़्यादा जिज्ञासु आने लगे। 1960 के दशक में हुज़ूर महाराज जी के विदेशों में सत्संग प्रोग्राम के बाद से विदेशों से आनेवाली संगत की संख्या और बढ़ गई। 1965 के आसपास प्राकृतिक रूप से सुंदर, खुले मैदान में इंटरनेशनल गेस्ट हाउस बनवाया गया जिसमें छत्तीस कमरे थे जिनके साथ बाथरूम भी थे। इसमें एक बैठक, खाने का कमरा, मीटिंग रूम, धोबी की सुविधा तथा दफ़्तर भी थे। इस तरह बीसवीं सदी के आरंभ से ही गेस्ट हाउस, शैड, सराय, घरों का और स्नानगृह आदि का निर्माण बिना रुके लगातार चल रहा है। शुरुआती दौर में डेरे के अकॉमोडेशन विभाग की साधारण-सी व्यवस्था थी। सत्संग-घर के दूसरी ओर बड़े के एक बड़े पेड़ के नीचे मेज़ और कुछ कुर्सियाँ लगाकर अकॉमोडेशन का कार्य किया जाता था। अगर गेस्ट हाउस या किसी डेरा-निवासी के घर में रहने के लिए जगह नहीं मिलती थी तो किसी बरामदे, फ़ुटपाथ, या फिर कहीं भी खुले में बिस्तर बिछाकर संगत सो जाती थी। आज इस विभाग का एक आधुनिक कार्यालय है जो चौबीसों घंटे खुला रहता है। यहाँ कंप्यूटर की मदद से सारा कार्य होता है। सेवादार बड़ी कुशलता से और व्यवस्थित रूप से विश्व भर से आनेवाली संगत को अकॉमोडेशन देते हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि अब डेरे में रहने के लिए बहुत जगह हैं और इनमें पहले की तुलना में बहुत अधिक सुविधाएँ भी हैं, लेकिन संगत के लिए रहने की जगह का प्रबंध करने के पीछे मक़सद वही है जो शुरू में था और वह है—संगत के आराम और सुविधा का ध्यान रखना ताकि वे बेफ़िक्र होकर अपने रूहानी मक़सद को पूरा करने की ओर ध्यान दे सकें।



इंजीनियरों के साथ नक्शे देखते हुए।



पुराना डेरा जिसकी दायीं ओर नए घर बनाए गए हैं।

“मुझे बताया गया है कि बाबा जैमल सिंह जी के यहाँ आने से पहले एक बावला-सा दिखाई देनेवाला जो असल में रूहानी कमाई वाला फ़क़ीर था, अकसर इधर-उधर से पत्थर इकट्ठे करके इस स्थान पर छोटी-छोटी ढेरियाँ बनाया करता था जहाँ इस समय डेरा है। उसे कान्हा कमला कहते थे। अगर कोई उससे पूछता कि वह क्या कर रहा है तो वह रुककर जवाब देता: ‘यह जगह एक दिन बहुत फले-फूलेगी। यहाँ बड़े शानदार मकान बनेंगे। यहाँ शहर की तरह चहल-पहल होगी।’ उन दिनों यहाँ वास्तव में कुछ नहीं था, कोई भी इमारत नहीं थी।

यह सारा इलाक़ा सुनसान और वीरान था।”

महाराज सावन सिंह जी





2014

1992

1973

1954

हेरिटेज स्क्वेअर
1920s

डरे के विकास का नक्शा

डेरा : एक अनुभव



“डेरा एक अद्भुत क़स्बा है; हमदर्दी, आपसी तालमेल और प्रेम ही यहाँ का क़ानून है। नफ़रत से भरे संसार में डेरा प्रेम का संदेश देता है; भेदभाव से भरे इस संसार में डेरा आपसी सहयोग की प्रेरणा देता है; स्वार्थ से भरे इस संसार में डेरा निःस्वार्थ सेवाभाव की मिसाल है; संघर्ष, शत्रुता, अविश्वास और द्वेष से भरे इस संसार में डेरा शांति का साकार रूप है।”

दीवान दरियाई लाल कपूर, धरती पर स्वर्ग

सत्संग के लिए निर्धारित दिनों में डेरे में आनेवाली भारी संगत का हिस्सा बनना कैसा लगता है, इसे अनुभव से ही समझा जा सकता है। रेलगाड़ियों, बसों, कारों, मोटर-साइकिलों और स्कूटरों आदि द्वारा यहाँ तक कि पैदल चलकर भी लाखों की संख्या में संगत यहाँ पहुँचती है। बिना किसी परेशानी या हड़बड़ी के सभी को डेरे में कुछ दिन ठहरने के लिए जगह मिल जाती है। उन्हें आराम करने के लिए और अपने नए-पुराने मित्रों के पास बैठने का भी समय मिल जाता है।

ऊपरी तौर पर देखा जाए तो डेरा किसी सुंदर और व्यवस्थित क़स्बे जैसा लगता है लेकिन इसकी अपनी ख़ासियत है। डेरे की योजना ऐसी है कि एकाएक पचास से सौ गुणा बढ़ी हुई संगत भी बिना किसी शोरगुल या परेशानी के यहाँ आराम से समा जाती है।

चूँकि डेरा आनेवाली बहुत-सी संगत रेलगाड़ियों से ही सफ़र करती है, इसलिए सत्संग के लिए निर्धारित प्रोग्राम के दौरान भारतीय रेलवे विभाग अतिरिक्त रेलगाड़ियों की व्यवस्था करता है और ब्यास स्टेशन पर रुकनेवाली रेलगाड़ियों में अतिरिक्त डिब्बे जोड़ दिए जाते हैं। बड़ी संख्या में आनेवाले यात्रियों की सुविधा के लिए डेरे ने भारतीय रेलवे विभाग के साथ मिलकर ब्यास स्टेशन को बेहतर बनाने की ज़िम्मेदारी ली है।

इसके अलावा प्रशासन ने डेरे की सुविधा के लिए रेलवे लाइन के ऊपर चार रास्तों वाला पुल बनाया है। मुख्य राजमार्ग की ओर जाने के लिए एक बाई-पास बनाने की भी योजना है, ताकि ब्यास क़स्बे पर भारी संगत का असर न हो और सत्संग प्रोग्राम के बाद जब संगत की भीड़ डेरे से लौटती है तो उस समय ट्रैफ़िक जाम न हो।

डेरे में अलग-अलग दिशाओं से आनेवाली संगत के लिए तीन गेट हमेशा खुले रहते हैं। दो गेटों के पास बसों, स्कूटरों समेत गाड़ियों की पार्किंग में लगभग 18,300 गाड़ियाँ खड़ी की जा सकती हैं।

डेरे पहुँचने पर हर व्यक्ति की सुरक्षा-जाँच की जाती है। सामान की भी तलाशी की जाती है। सारे इलैक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे मोबाइल फ़ोन, कैमरा, आइ-पॉड, एम.पी.3 प्लेयर और लैपटॉप प्रवेश-द्वार पर जमा करवाए जाते हैं जिन्हें डेरे से लौटते समय वापस लिया जा सकता है।

जो लोग अकॉमोडेशन के लिए महीनों पहले आवेदन करते हैं, उन्हें रजिस्ट्रेशन के बाद हॉस्टल या सराय में ठहराया जाता है। जो बुकिंग करवाए बिना डेरे आते हैं, विशेषकर भारत के ग्रामीण-क्षेत्रों से आनेवाली संगत, उनके लिए 13 विशाल शैड हैं। इनमें से हर शैड में 7,000 से 11,000 तक संगत आराम कर सकती है। डेरे में पहली बार आनेवाले व्यक्ति के लिए यह बड़ा आश्चर्यजनक दृश्य है: डेरे में संगत की बाढ़-सी आ जाती है जो बड़े ढंग से अपना सामान, यहाँ तक कि अपना बिस्तर और अपने बच्चों को भी कंधों पर उठाकर ठहरने के स्थान की ओर पैदल ही चली होती है।









ब्यास रेलवे स्टेशन पर पहुँचकर डेरा जानेवाली बसों पर चढ़ते हुए।







डेरे का एक गेट।





डेरा इस तरह डिज़ाइन किया गया है कि भारी संख्या में आनेवाली संगत आराम से सत्संग-पंडाल की ओर आ-जा सके। यूँ भी कहा जा सकता है कि डेरे की सारी सड़कें पंडाल की ओर ही जाती हैं। बहुत-सी संगत कारों, बसों, ट्रकों, ट्रैक्टरों, साइकिलों और स्कूटरों पर डेरा पहुँचती है।





सामान जमा करवाना और सराय में ठहरने के लिए बुकिंग।







डरे पहुँचने पर सुरक्षा-जाँच।



मोबाइल फ़ोन और इलेक्ट्रॉनिक
उपकरण जमा कराते हुए।

भंडारे के समय लगभग 3,500 सेवादार अलग-अलग गेट से संगत को पंडाल में भेजते हैं, साल के बाक़ी दिनों में इन सेवादारों की संख्या घटकर 150 तक रह जाती है। संगत इलैक्ट्रॉनिक मेटल डिटेक्टरों में से गुज़रकर जाती है। कैमरे और मोबाइल फ़ोन आदि इलैक्ट्रॉनिक चीज़ों को डेरे के अंदर ले जाने की मनाही है। सुरक्षा-जाँच के बाद संगत को अपने-अपने बैठने के स्थान पर भेजा जाता है; स्त्रियों और पुरुषों के बैठने की व्यवस्था अलग-अलग है। सत्संग शुरू होने से पहले पूरे पंडाल में डाक्टर यह देखने के लिए संगत के बीच घूमते हैं कि कहीं कोई बीमार तो नहीं लग रहा। पूरे सत्संग-पंडाल में कई प्राथमिक चिकित्सा केंद्र हैं। पंडाल के आसपास बड़े-बड़े साफ़-सुथरे शौचालयों की तथा पीने के पानी की भी सुविधा है।



मंड-पंडाल के गेट पर सुरक्षा-प्रबंध।









सत्संग जाते हुए रास्ते में।





अलग-अलग जगहों से सत्संग के लिए आ रही संगत।

मंड-पंडाल में प्रवेश करते हुए भाई लोग।





सत्संग अर्थात् 'सत का संग' जहाँ परमार्थ के बारे में चर्चा की जाती है। डेरे में होनेवाले सत्संगों में सतगुरु स्वयं या कोई सत्संगकर्ता संतों के उपदेश की व्याख्या करते हैं; ये वही रूहानी सत्य हैं जो विश्व के सभी धर्मों का सार हैं। नामदान प्राप्त संगत को भजन-बंदगी करने की, संतमत के उपदेश का पालन करने की, जिसमें शाकाहार भोजन की ज़रूरत और नशीले पदार्थों से परहेज़ शामिल है और नैतिकतापूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है। सत्संगकर्ता संतों की वाणी से तथा धार्मिक-ग्रंथों से उद्धरण देकर कभी कथाओं द्वारा, कभी विनोदपूर्ण ढंग से और कभी तर्क

देकर इतनी कुशलता से सत्संग करते हैं कि अनपढ़ ग्रामीण से लेकर उच्च शिक्षाप्राप्त विद्वान तक इसे सहजता से समझ लेते हैं। किशोर युवक-युवतियाँ तथा बड़े बुजुर्ग, किसान और डाक्टर, स्त्री तथा पुरुष, सभी यह उपदेश समझ सकते हैं क्योंकि यह प्रेम की सीधी-सादी भाषा में समझाया जाता है। विश्व के सभी धर्मों की तरह संतमत का प्रमुख सिद्धांत भी यही है कि परमात्मा प्रेम का रूप है। हम सभी परमात्मा के अंश हैं और भजन-बंदगी द्वारा अपने अंतर में परमात्मा का साक्षात्कार कर सकते हैं।







पिछले पृष्ठ पर: महाराज चरन सिंह जी 1980 के दशक में सत्संग देते हुए।

कोई भी दिन ऐसा नहीं है जब डेरे में सुबह सत्संग नहीं होता। बारिश हो या धूप, गर्मी हो या सर्दी, सत्संग अवश्य होता है। जब सतगुरु डेरे में नहीं होते तब भी संगत हज़ारों की संख्या में होती है, लेकिन निर्धारित सत्संग-कार्यक्रमों के दौरान लाखों की संख्या में देश-विदेश से आई संगत से मंड-पंडाल पूरी तरह भर जाता है। सत्संग हर रोज़ होता है, वास्तव में सत्संग डेरे की धड़कन है। सत्संग ही डेरे के वजूद की वजह है, दिन-रात हज़ारों सेवादारों का सेवा में लगे रहने का मक़सद सत्संग ही है। सत्संग है तो डेरा है।



ऊपर: रोज़ाना का सत्संग।





मंड का सत्संग शैड एक विशाल शैड है जो चारों ओर से खुला है, इसकी छत हलके वज़न वाले स्टील के स्पेस-फ्रेम की बनी है। इसमें पाँच लाख तक संगत बैठ सकती है और ज़रूरत पड़ने पर बैठने की जगह बढ़ाई भी जा सकती है। शैड का फ़र्श गोबर और मिट्टी को मिलाकर लीपा जाता है; क्योंकि इन चीज़ों को रोगाणु-नाशक और विद्युत-रोधक माना जाता है, इसलिए भारत में प्राचीन काल से ही इनका इस्तेमाल किया जाता है। बड़े-बड़े टाट बिछाकर फ़र्श को ढका जाता है। गर्मी के मौसम में पंखे शैड को हवादार रखते हैं, साथ ही छत में फ़व्वारे की भी व्यवस्था है जिसमें हवा को ठंडा करने के लिए पानी की फुहार बरसती है।







“सत्संग का मक़सद हमारे विश्वास, भजन और सुमिरन को दृढ़ करना है, ऐसा माहौल बनाना है ताकि हम भजन-सुमिरन कर सकें। हमारे मन में कोई संदेह, कोई सवाल या कोई अड़चन है तो सत्संग में या तो हमें इसका जवाब मिल जाता है, या यह ख़त्म हो जाती है या सुलझ जाती है। सत्संग कोई रस्मो-रिवाज या कोई धार्मिक प्रथा नहीं है। हम सत्संग में इसलिए जाते हैं कि हम एक दूसरे की ताक़त बनें, हमारा विश्वास पक्का हो, हम एक दूसरे की सहायता कर सकें, एक दूसरे का सहारा बन सकें। इससे हमें भजन-सुमिरन में बहुत सहायता मिलती है।”

महाराज चरन सिंह जी













लाखों की संख्या में आई संगत पंडाल में चाहे कहीं भी बैठी हो, वे अत्याधुनिक तकनीक वाले साउंड सिस्टम के द्वारा सत्संग सुनती है और बहुत दूर बैठी संगत 26 बड़ी-बड़ी वीडियो स्क्रीन पर सतगुरु के दर्शन करती है। सत्संग शुरू होने से पहले इन वीडियो स्क्रीन पर संगत को सामाजिक विषयों जैसे अंगदान, नारी को अधिकार दो आदि पर छोटी-सी फ़िल्म दिखाई जाती है जो संगत को उनके अधिकारों और ज़िम्मेदारियों की जानकारी देती है। कुशल अनुवादक सत्संग का अनुवाद अंग्रेज़ी, फ्रेंच, जर्मन, स्पैनिश, चेक आदि आठ भाषाओं में साथ ही साथ करते हैं।

ऊपर बायें: वीडिओ स्क्रीन देखती हुई संगत।

नीचे बायें और इस पृष्ठ पर: सत्संग का साथ-ही-साथ अनुवाद।



साल में कई बार निर्धारित सत्संगों के दौरान बाद दोपहर, 15 से 25 साल तक की आयु के युवक-युवतियों के लिए सवाल-जवाब का कार्यक्रम होता है। ये लोग बाबा जी से कोई भी सवाल पूछ सकते हैं, परंतु उन सवालों का संबंध संतमत या संतमत के अनुसार जीवन-शैली अपनाने से होना चाहिए। ये सवाल आम तौर पर इन युवाओं द्वारा दिल की गहराइयों से पूछे जाते हैं। तेज़ी से आधुनिकता की ओर बढ़ते समाज में जहाँ बड़ी जल्दी सामाजिक और आर्थिक बदलाव आ रहे हैं, ये युवा संतमत के अनुसार जीवन में तालमेल बैठाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। करुणा और आत्मीयता से भरपूर बाबा जी हर सवाल का जवाब बड़े प्यार से, कभी हँसी-मज़ाक में देते हैं और कभी गूढ़ गंभीर बात को सहज ढंग से समझा देते हैं। कुछ युवा लोगों को इस सवाल-जवाब कार्यक्रम के दौरान बाबा जी के सामने शब्द गाने का अवसर भी मिलता है। उनकी मधुर और ताज़गी से भरी आवाज़ से अकसर संगत भावुक हो उठती है और उनकी आँखों में आँसू तक आ जाते हैं।





सवाल पूछते हुए और शब्द गाते हुए युवा।

निर्धारित सत्संग प्रोग्राम के समाप्त होते ही डेरा एकदम ख़ाली होने लगता है। संगत अपना जमा किया हुआ सामान, मोबाइल फ़ोन आदि वापस लेकर, अपने परिवार के साथ अपने-अपने घरों को लौटने की तैयारी शुरू कर देती है। जैसे ही संगत की वापसी शुरू होती है, वे बसों, रेलगाड़ियों या फिर जिस भी साधन से आए थे, उसी ओर जाते हुए नज़र आते हैं। संगत डेरे में आध्यात्मिक पोषण पाकर डेरे की चारदीवारी से बाहर अपनी-अपनी जीवनधारा में वापस लौटने के लिए चल पड़ती है। सत्संग में सुने संतों के उपदेश के बारे में और ज़्यादा जानकारी प्राप्त करने के लिए, संगत की सुविधा के लिए मेन गेट के पास मोबाइल वैन में बुकस्टाल हैं ताकि डेरे में आते हुए या वापस लौटते हुए संगत अपनी इच्छा के अनुसार किताबें ख़रीद सके।



सत्संग से लौटते हुए।





डेरा: एक अनुभव

संगत के लिए डेरे में भोजन की क्या व्यवस्था है? या फिर इससे भी बड़ा सवाल यह है कि इस हुजूम को कैसे आराम से साफ़-सुथरा खाना खिलाया जाता है? इसका जवाब है—मुख्य रूप से लंगर द्वारा। डेरे में खाना पकाने और खाना खिलाने की यह सबसे बड़ी जगह है, जहाँ हर आनेवाले व्यक्ति को शाकाहारी भोजन खिलाया जाता है। लंगर में एक बार में 50,000 व्यक्ति इकट्ठे बैठकर खाना खा सकते हैं। यह लंगर चौबीस घंटे चलता है। यहाँ रोज़ चाय, नाश्ता, दोपहर का खाना और रात का खाना खिलाया जाता है।

दूसरे स्थान जहाँ (बहुत कम क्रीम पर) खाना उपलब्ध है, वे हैं—भोजन-भंडार, स्नैक बार और कैंटीन जो डेरे में जगह-जगह पर बनाए गए हैं। इन सभी स्थानों पर कम दाम में बढ़िया और पौष्टिक खाना मिलता है; खाना कई तरह का होते हुए भी सादा

होता है। अलग-अलग जगहों पर भोजन की व्यवस्था होने से भारी भीड़ का नियंत्रण करने में सहायता मिलती है, क्योंकि सभी लोग एक ही समय में, एक ही जगह पर इकट्ठे होकर भीड़ नहीं करते। इसके अलावा सराय तथा शैड में खोले गए काउंटरों से संगत जूस-पैक, बिस्कुट, चिप्स और चाकलेट आदि खरीद सकती है।

डेरा कोई तपोवन नहीं है जहाँ लोगों को केवल सूखी रोटी खाकर ही गुज़ारा करना है। यहाँ तैयार होनेवाले हर तरह के भोजन में शुद्ध घी, दूध, ताज़ा निकला तेल, ताज़ा पीसा हुआ अनाज और ताज़ी सब्जियाँ इस्तेमाल की जाती हैं, ताकि डेरे में आध्यात्मिक पोषण पाने के उद्देश्य से आनेवाली संगत को खाने की किसी भी तरह से कमी न महसूस हो। डेरे के भोजन की सबसे बड़ी खूबी है, उसमें मिला हुआ 'प्रेमभाव'। सेवादर इसे जिस प्रेम से तैयार करते और परोसते हैं उससे इसका स्वाद खास हो जाता है।





बायें: स्नैक बार
ऊपर: लंगर

लंगर

सुबह सत्संग से पहले और फिर सत्संग के बाद लंगर में बहुत संगत आती है। लंगर का अर्थ केवल वह जगह नहीं है जहाँ मुफ्त खाना खिलाया जाता है, पंजाबी में 'लंगर' से भाव 'गुरु का लंगर' है, क्योंकि यही वह जगह है जहाँ आनेवाले हर व्यक्ति पर सतगुरु की दया-मेहर बरसती है।

डेरे का लंगर 48 एकड़ में फैला उच्च-तकनीक वाला विशाल क्षेत्र है। यह 24 घंटे खुला रहता है और यहाँ आनेवाली भारी संगत के लिए दिन में तीन बार भोजन तैयार होता है। 50,000 व्यक्तियों को खाना खिलाने में केवल 20 मिनट का समय लगता है। इसका मतलब है कि 2 से 3 घंटे में लगभग 3,00,000 व्यक्ति भोजन कर सकते हैं। सेवादर यहाँ दिन-रात लगातार बारी-बारी सेवा करते हैं।









लंगर में खाना खिलाने के लिए छः शैड हैं और बाक्री की जगह में सैंकड़ों वृक्ष लगाए गए हैं, जिससे खुली जगह में खाना खानेवाली संगत को छाया भी मिले और बैठने के लिए हरा-भरा स्थान भी। लगभग 90 मीटर लंबी क्रतारों में लोग टाट पर बैठते हैं और सेवादार उन्हें दाल, सब्जी, खिचड़ी, रोटी, अचार आदि पारंपरिक खाना परोसते हैं। वे बार-बार और खाने के लिए आग्रह करते हैं। चाय सुबह से शाम तक मिलती रहती है। आज तक कभी भी किसी को लंगर के लिए मना नहीं किया गया। हर किसी को बड़े प्रेम से एक जैसा सादा, पौष्टिक भोजन खिलाया जाता है।





सेवादर आज भी संगत को उसी तरह खाना परोसते हैं जिस तरह वे पुराने समय में परोसा करते थे।



शुरुआती दौर में लंगर।



भोजन-भंडार, स्नैक बार और कैंटीन

तीनों भोजन-भंडारों का सप्ताह के हर दिन का निश्चित मैन्यू है। हर भोजन में दाल, चावल, सब्जी, रोटी, सलाद, अचार और दही शामिल हैं। जो कोई कम तेल और कम मसाले वाला भोजन करना चाहता है उसके लिए ऐसा सादा भोजन भी उपलब्ध है। लंगर के अलावा ये भोजन-भंडार ही (चौथा भोजन-भंडार बन रहा है) खाने के मुख्य स्थान हैं। निर्धारित सत्संगों में यहाँ एक बार के खाने में लगभग 42,000 व्यक्ति खाना खाते हैं।

डेरे में दो स्नैक बार बनाए गए हैं जहाँ चाय और गरमागरम नाश्ता मिलता है। इसमें उत्तरी तथा दक्षिणी भारत के फ़ास्ट फ़ूड जैसे इडली-साँभर, मसाला-डोसा, समोसे, पकौड़े, चना-भटूरा,

कुछ दूसरे प्रकार के नाश्ते और मिठाइयाँ (लड्डू, जलेबी, गुलाब जामुन) शामिल हैं।

डेरे में चार कैंटीन हैं जहाँ नाश्ता, ब्रेड, रस्क, जूस, सॉफ़्ट ड्रिंक्स और चाय-कॉफ़ी आदि मिलते हैं। निर्धारित सत्संगों के दौरान यहाँ सफ़र करनेवाली संगत के लिए पैकड लंच की भी व्यवस्था होती है। छोटा और साधारण मैन्यू तथा खुली जगह होने के कारण इन कैंटीन में संगत की भारी भीड़ को परोसना आसान हो जाता है।



बायें: भोजन-भंडार
ऊपर: कैंटीन





रोटियाँ बनाना



गेहूँ के ताज़े आटे की बनी रोटी लंगर के भोजन का अहम हिस्सा है। रोटी के बिना खाना अधूरा माना जाता है। लंगर में हर व्यक्ति के एक वक्रत के भोजन के लिए अंदाज़न तीन रोटियाँ तैयार की जाती हैं। इस तरह जब तीन लाख व्यक्ति दोपहर के भोजन के लिए आते हैं तो लगभग दस लाख रोटियाँ तैयार की जाती हैं। इतनी रोटियाँ बनाने के लिए आटा मिलाने, गूँधने और फिर बेलकर तैयार करने के लिए सेवादार रात से ही काम करना शुरू कर देते हैं, संगत की ज़रूरत को पूरा करने के लिए वे दिन भर सेवा में लगे रहते हैं।

निर्धारित सत्संग कार्यक्रमों के दौरान लाखों की संख्या में रोटियाँ बनाने के लिए 80 टन तक आटा इस्तेमाल हो जाता है। गेहूँ और कभी-कभी मक्की से लदी गाड़ियाँ आधुनिक चार मंज़िला आटा मिल (सन 2011 में बनाई गई) में पहुँचती हैं। गेहूँ को दो बड़े-बड़े अनाज-गोदामों (साइलोज़) में रखा जाता है जिनका नियंत्रण कंप्यूटर द्वारा होता है। हर गोदाम में 2,000 टन तक गेहूँ रखा जा सकता है। इन अनाज-गोदामों में वायु-संचार और धूम्रिकरण की प्रक्रिया से अनाज को फफूँद और कीड़ों से बचाया जाता है। आटे की ज़रूरत पड़ने पर 5 से 20 टन तक गेहूँ प्रति घंटा पाँच निकास द्वारों से मिल की ओर चला जाता है। वहाँ पहले गेहूँ साफ़ होता है, फिर चार पिसाई मशीनों में से एक मशीन में इस गेहूँ की पिसाई होती है। आटे को चार बार साफ़ किया जाता है। जब गेहूँ की पिसाई हो जाती है तो आटे को छानकर स्टील के बड़े-बड़े बरतनों में रखा जाता है जिनमें से हर एक बरतन में 25 टन तक आटा रखा जा सकता है। कुल मिलाकर मिल में 150 टन आटा जमा रखा जा सकता है। लंगर के व्यस्त दिनों में 15 से 55 टन तक आटा हमेशा तैयार रखा जाता है। जबकि आम दिनों में कम से कम 3 से 3½ टन आटा रोज़ तैयार रखा जाता है। मक़सद यह है कि किसी भी समय ज़रूरत पड़ने पर लंगर में आटा तैयार हो।

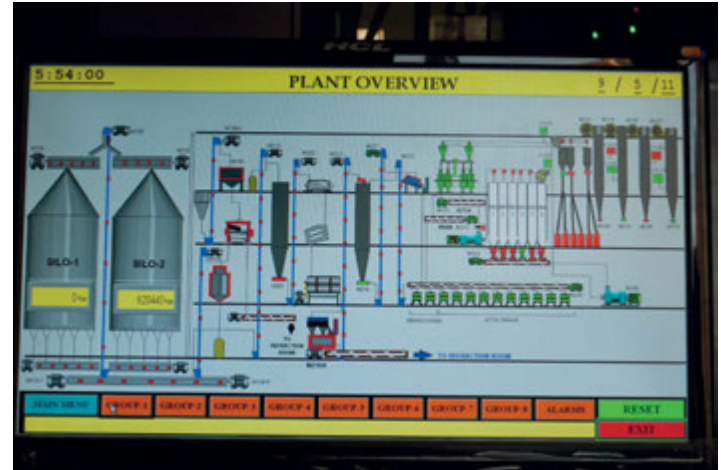
रोटियों की भारी खपत के कारण मशीनों से रोटियाँ बनाने के तरीकों पर काफ़ी खोज कार्य हुआ है। आजकल आटा गूँधने की छः मशीनें इस्तेमाल की जाती हैं; हर एक मशीन 3½ मिनट में 128 किलो आटा गूँध देती है (जिससे 1,550 रोटियाँ तैयार की जा सकती हैं)। चारों ओर से खुले शैड में जहाँ अभी भी रोटियाँ परंपरागत ढंग से बनाई जाती हैं, यह गूँधा हुआ आटा पहियोंवाली ट्रॉलियों में डालकर पहुँचाया जाता है। 3,000 से 4,000 तक महिला सेवादार रोटियाँ बेलकर उन्हें बड़े-बड़े लोहे के तवों पर सेकती हैं, इन तवों के नीचे सूखी घास से आग जलाई जाती है। रोटियाँ बनानेवाले सात शैड में से हर एक में 20 बड़े-बड़े लोहे के तवे हैं जिन पर एक घंटे में 70,000 के करीब रोटियाँ बनाई जाती हैं।





फ़सल-कटाई के समय लोकल किसानों द्वारा सेवा में दिया गया अनाज।





पिसाई की भिन्न-भिन्न प्रक्रियाओं को संसार भर में प्रचलित कलर-कोडिंग की पद्धति द्वारा दर्शाया जाता है: हलका नीला उपकरण वह है जहाँ हवा के दबाव से अनाज को साफ़ किया जाता है। गाढ़ा नीला उपकरण वह है जो सघन हवा के दबाव से अपने आप काम करता है। हलका सफ़ेद उपकरण वह है जहाँ गेहूँ रखा जाता है और शुद्ध सफ़ेद उपकरण वह है जहाँ से गेहूँ का आटा बनकर निकलता है। हरे रंग का उपकरण पानी का संकेत देता है जहाँ धोने का कार्य होता है। भूरा रंग प्रतीक है – सफ़ाई की प्रक्रिया के दौरान निकली हुई धूल-मिट्टी के जमा होने का। जिन बर्तनों में साबुत मक्की और सफ़ेद चने रखे जाते हैं, उन्हें हलके पीले रंग से रंगा गया है।



आटे के छोटे-छोटे पेड़े बनाने के लिए मशीन का प्रयोग होता है।
इससे रोटियाँ जल्दी और एक ही आकार की बनती हैं।









बायें ऊपर: मशीन द्वारा रोटियाँ बनाते हुए।
ऊपर: तवे पर रोटियाँ बनाते हुए।



भोजन-भंडार में पकती तंदूरी रोटियाँ।



रोटियों पर घी लगाते हुए।

रोटियों को पकाकर उन पर घी लगाया जाता है और बड़े-बड़े टोकरो में रखकर उन्हें कंबलों से ढका जाता है ताकि ये गर्म रहें। ज़रूरत पड़ने पर रोटियों को टिन के ट्रकों में रखा जाता है। ये ट्रक फिर एक लिफ्ट में रखे जाते हैं ताकि इन्हें नीचे लाया जा सके। यहाँ से सेवादार रोटियाँ आगे पहुँचाते हैं।

सर्दी के मौसम में मक्की की रोटियाँ भी बनाई जाती हैं जिन्हें आम तौर पर साग (सरसों, पालक या दूसरे हरे पत्तों का) के साथ परोसा जाता है।

साफ़-सफ़ाई के नियमों का बड़ी सख्ती से पालन किया जाता है। महिला सेवादार अपने बालों को भलीभाँति बाँधकर रुमाल से सिर ढकती हैं। सेवा शुरू करने से पहले सभी सेवादार साबुन से हाथ धोते हैं और सुपरवाइज़र सेवादार बड़े ध्यान से हर सेवादार के हाथों का मुआयना करते हैं।





लंगर

महाराज चरन सिंह जी लंगर में
रोटियों पर दृष्टि डालते हुए।





ਲੰਗਰ



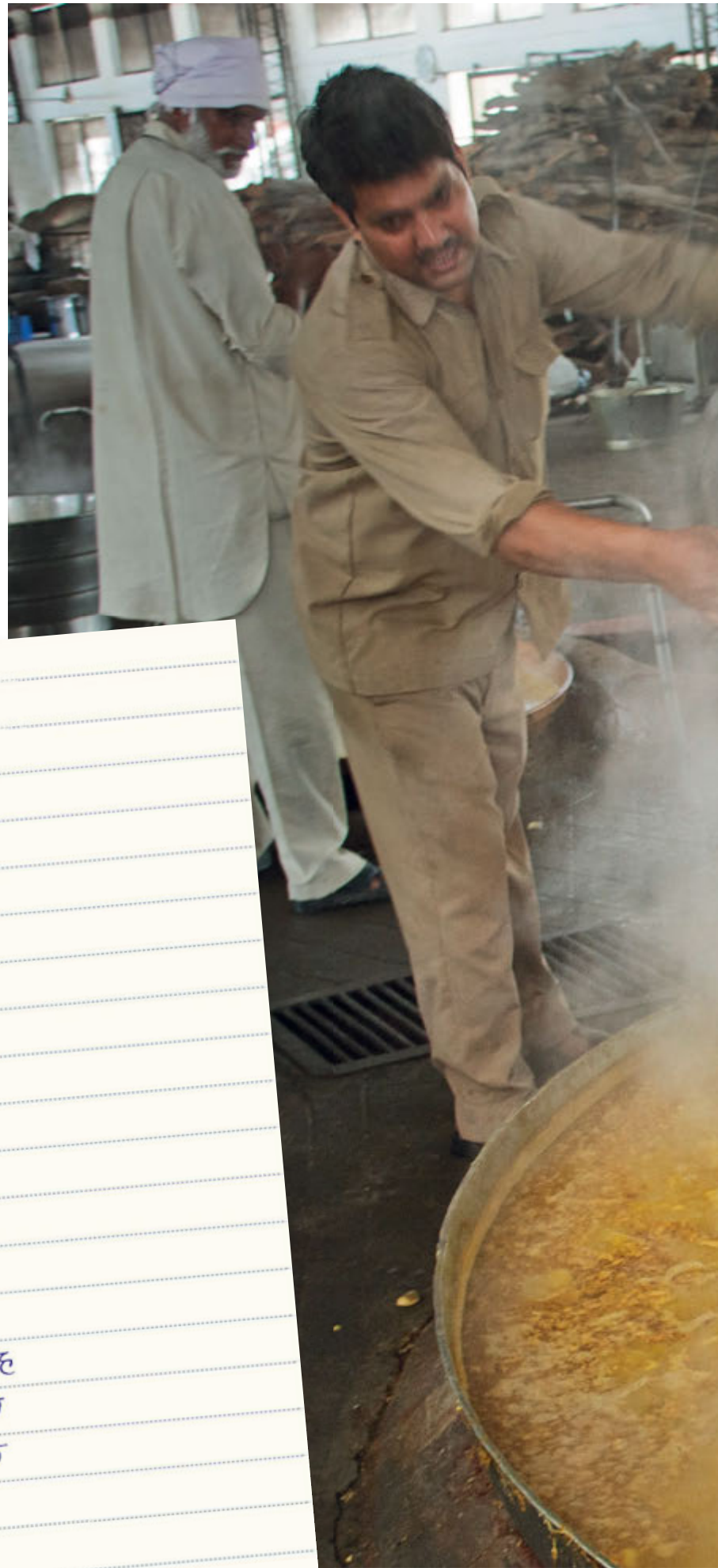
दाल बनाना

लंगर में रोटियों के साथ साबुत या धुली दाल परोसी जाती है। लंगर की दाल भोजन-भंडारों में भी भेजी जाती है। दोपहर के खाने में पौष्टिक और गाढ़ी दाल परोसी जाती है और रात के खाने में हलकी-फुलकी दाल। चारों ओर से खुले शैड में आठ बड़े-बड़े कड़ाहों में दाल पकाई जाती है। कुछ कड़ाहों में एक बार में 2000 लीटर दाल पकाई जाती है जबकि दूसरे कड़ाहों में 800 से 1200 लीटर तक दाल तैयार होती है। पकने का समय दाल की क्रिस्म के मुताबिक 45 मिनट से 3 घंटे तक का होता है। जिन दालों को पकने में ज़्यादा समय लगता है, उनके लिए प्रेशर कुकर का इस्तेमाल किया जाता है। हर 1½ घंटे में सेवादार 1,80,000 संगत के लिए दाल तैयार कर सकते हैं।

चित्र में दिखाई देने वाली दाल पीसकर बेसन बनाने से पहले सुखाई जाती है। सेवादार बीबियाँ पीसने से पहले इसे साफ़ करती हैं।







2800 लोगों के लिए लंगर की दाल

दाल - 150 किलो
 पाती - 650 किलो
 नमक - 7 प्रतिशत (%)
 घी - 5 किलो
 हल्दी - 1 किलो
 जीरा - 500 ग्राम
 अदरक - 500 ग्राम (सर्दियों में)
 लहसुन - 500 ग्राम
 लाल मिर्ची - 300 ग्राम
 गरम मसाला - 1 किलो

दाल को कढ़ाई में चढ़ायें,
 बूने तक हिलाते रहें। अगर यह
 राजमा या सफ़ेद चने की दाल
 है तो पहले उन्हें 30 मिनट तक
 प्रेशर कुकर में उबालें।





लंगर में परोसने के लिए दाल को पाइपों द्वारा स्टील के टैंकों में डालते हुए।



कड़ाहों में से दाल स्टेनलैस स्टील की छ: इंच मोटी फ़ूड-ग्रेड पाइप के ज़रिये पहियों वाले स्टेनलैस स्टील के टैंकों में डाली जाती है। हर टैंक में 1½ टन दाल डाली जा सकती है। इन टैंकों को ट्रैक्टरों से जोड़कर संगत को खाना परोसने वाली जगह पर ले जाया जाता है।

कभी-कभी लंगर में चावल भी बनाए जाते हैं। चावल पकाने के दो बड़े-बड़े बरतनों में दो सौ किलो सूखे चावल (जो पककर 600 किलो हो जाते हैं) पकाए जा सकते हैं। जब दक्षिणी भारत के इलाकों से संगत ज़्यादा आ जाती है तब ज़्यादा चावल बनाए जाते हैं, क्योंकि वे लोग पारंपरिक रूप से रोटियाँ खाने के आदी नहीं हैं। इस तरह जब अनुमान से अधिक संगत आ जाती है तो अकसर चावल बनाए जाते हैं क्योंकि चावल रोटियों के मुकाबले कम समय में तैयार हो जाते हैं।



लंगर में चावल बनाते हुए।



भोजन की तैयारी



लंगर और भोजन-भंडार में सब्जियाँ तैयार करते हुए।





किसान सत्संगी डेरे में कुछ खाद्य-पदार्थ सेवा में लाते हैं; वे गाड़ियाँ भर-भरकर गेहूँ, दाल, चावल और सब्जियाँ लाते हैं।

भिन्न-भिन्न पदार्थों के डिब्बे



डेरे में बननेवाले पकौड़े पनीर के बजाय टोफू से बनाए जाते हैं। टोफू जिसे आम लोग सोया पनीर कहते हैं, डेरे के स्नैक बार में ही ऑर्गेनिक सोयाबीन से बनाया जाता है। टोफू डेरे में हर बिक्री काउंटर पर उपलब्ध है। आजकल डेरे में पनीर के सारे परंपरागत व्यंजनों में टोफू का ही प्रयोग होता है क्योंकि यह ज़्यादा पौष्टिक है और दूध से बने पनीर के मुकाबले सस्ता भी है। यहाँ एक दिन में 1500 किलो टोफू बनाने की सुविधा है।





लहसुन का ढेर



शलगम





स्नैक बार और कैंटीन में बनता हुआ नाश्ता और मिठाइयाँ।







बायें: पकौड़े बनाते हुए।

ऊपर: स्नैक बार में समोसे बनाते हुए।



थरमल कुकिंग: कुछ व्यंजन तैयार करने के लिए थरमल कुकिंग का प्रयोग किया जाने लगा है जैसे जलेबी (सबसे ऊपर) और भटूरा (ऊपर)। खाना तैयार करने के पर्यावरण अनुकूल तरीकों को आजमाने के लिए डेरा हमेशा तत्पर रहता है। थरमल कुकिंग में गर्म तरल पदार्थ का इस्तेमाल किया जाता है जिसे पकानेवाले बरतन के इर्दगिर्द लगी पाइपों में प्रवाहित किया जाता है। अगर यह तरीका किफ़ायती और व्यावहारिक रहा तो थरमल तरल पदार्थ को गर्म करने के लिए सौर-ऊर्जा का इस्तेमाल किया जाएगा।



स्नैक बार में डोसा बनाते हुए।

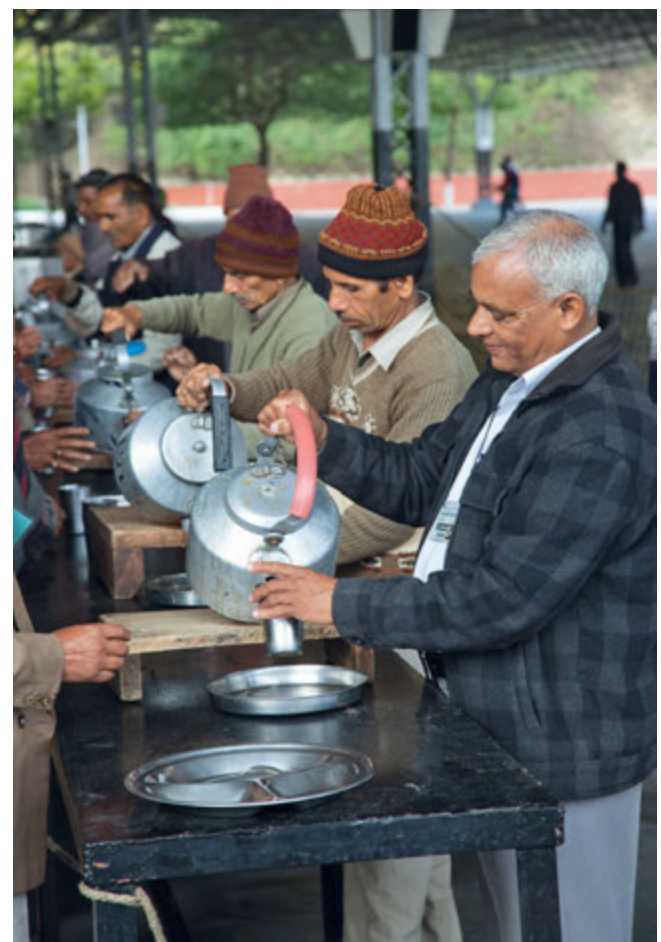
चाय का समय

लंगर में पूरा दिन ख़ूब चाय बनती है और पिलाई जाती है। लंगर की दूसरी चीज़ों की तरह यहाँ चाय बनाने का काम भी बड़े पैमाने पर होता है। खाना बनानेवाले शैड के एक हिस्से में फ़ूड-ग्रेड स्टेनलैस स्टील के बड़े-बड़े चार बरतनों में चीनी और चाय-मसाला डालकर चाय को उबाला जाता है, हर बरतन में 1,200 लीटर तक चाय बनती है। 8,000 लीटर क्षमता वाले कूलर्स में से दूध निकाला जाता है और 1,000 लीटर के दो बड़े-बड़े बरतनों में इसे गर्म करके चाय में मिलाया जाता है। संक्षेप में कहें तो एक बरतन में 240 लीटर दूध को 840 लीटर पानी में मिलाकर उसमें 7 किलो चाय-पत्ती, 76 किलो चीनी और ज़ायके के लिए कुछ मसाले मिलाए जाते हैं। निर्धारित सत्संग-कार्यक्रमों के दौरान एक दिन में लगभग आधा टन चाय-पत्ती की खपत हो जाती है। 1,200 लीटर चाय के लिए पतले कपड़े के चार थैलों में खुली चाय-पत्ती डालकर उन्हें टी-बैग के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

जब चाय का एक बैच तैयार हो जाता है तो इसे छानकर स्टेनलैस स्टील की भूमिगत पाइपों के ज़रिये एक ख़ास जगह पर पहुँचाया जाता है जहाँ पर नलों से चाय परोसने के लिए बरतनों में डाली जाती है। लंगर में सुबह पाँच बजे से ही चाय मिलनी शुरू हो जाती है, चाय डेरे के कोने-कोने में ट्रालियों और ट्रकों द्वारा सेवा में जुटे सेवादारों तक पहुँचाई जाती है। सत्संग-कार्यक्रमों के दिनों में चाय 6,000 लीटर क्षमता वाले स्टेनलैस स्टील के बड़े टैंक में डाली जाती है ताकि ज़रूरत पड़ने पर चाय पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो। यहाँ चाय हमेशा ताज़ा मिलती है, इसे 45 मिनट से ज़्यादा समय तक नहीं रखा जाता। इसका मतलब है कि सेवादार हमेशा चाय बनाने में लगे रहते हैं। गर्म चाय संगत को भी और सेवादारों को भी दिन भर तरोताज़ा रखती है।



चाय के लिए स्टील का टैंक।





संगत की सुविधा के लिए तथा उन्हें तुरंत सेवा प्रदान करने के लिए पूरे डेरे में कई जगह अलग-अलग मूल्य के कूपन खरीदे जा सकते हैं। कैंटीन, स्नैक बार और भोजन-भंडार में पैसों के बजाय कूपन का इस्तेमाल किया जाता है।

RATE LIST OF CANTEEN NO: 1		
SR NO.	ITEM	RATE
1	TEA	3
2	MILK 200 ML	8
3	FRUIT JUICE	4
4	2PURI + SABJI	7
5	2PAV + SABJI	3
6	EXTRA SABJI	3
7	BURGER	12
8	PACK LUNCH	10
9	PAKORA	4
10	FRUIT TETRA	8
11	FRUIT BREAD	8
12	PLAIN BREAD	11
13	RISK 20 GM.	2
14	RISK 150 GM.	10
15	THALI	20
16	DHAI	7





ऊपर: भोजन-भंडार
नीचे: स्नैक बार



स्नैक बार

बरतन धोते हुए



लंगर में खाना खाने के बाद संगत अपने जूठे बरतन पास ही बनाए गए हौज़ में साबुन लगाकर नलों के नीचे पानी से साफ़ करती हैं। सेवादार इस बात की पूरी देखरेख करते हैं कि बरतन ठीक से साफ़ हो रहे हैं, ज़रूरत पड़ने पर वे बरतन फिर से धोते हैं। कैंटीन, स्नैक बार और भोजन-भंडार में सेवादार सारे बरतन खुद साफ़ करते हैं।



सेवादार बरतन साफ़ करते हुए।







सँभालने से पहले धूप में बरतन सुखाते हुए।

डेरा: एक अनुभव

जब से डेरा बना है, संगत को ठहराने के लिए रिहाइश का कार्य चलता आ रहा है, क्योंकि सतगुरु के दर्शन और सत्संग के लिए आनेवाली संगत की संख्या बढ़ती ही जा रही है। आजकल अकॉमोडेशन विभाग में सारा काम कंप्यूटर द्वारा किया जाता है। यहाँ हर एक की सुविधा और ज़रूरत का पूरा ध्यान रखा जाता है। डेरे में सभी का स्वागत है। यहाँ रहने की सुविधा निःशुल्क है। संगत में से कई लोग खासकर निर्धारित सत्संगों के दौरान रहने के लिए पहले से ही बुकिंग करवा लेते हैं। परंतु बिना बुकिंग आनेवाली संगत को भी यहाँ ठहरने के लिए साफ़-सुथरी सुरक्षित जगह मिल जाती है, जहाँ वे अपना सामान रखकर, नहा-धोकर रात को आराम कर सकते हैं। इस समय संगत को ठहराने के लिए तीन तरह की सुविधा है: शैड, सराय और हॉस्टल।

निर्धारित सत्संगों के दौरान डेरे में पहुँचनेवाली ज्यादातर संगत भारत के ग्रामीण इलाकों से आती है, वे बिस्तर साथ लाने और इकट्ठे ठहरने के आदी हैं और ठहरने के लिए बिना कोई बुकिंग कराए डेरे पहुँच जाते हैं। ऐसी संगत के लिए डेरे में अलग-अलग साईज़ के 15 शैड बनाए गए हैं जिनमें से हर एक में 6,500 से लेकर 13,500 तक संगत ठहर सकती है। संगत खुशी-खुशी नीचे चटाइयों पर बिस्तर बिछाकर सो जाती है। ये चटाइयाँ हर शैड में मिलती हैं।

आराम करने के लिए बनाए ये शैड भारी भीड़ के बावजूद बिल्कुल सुरक्षित हैं, सामान और क्रीमती वस्तुएँ जमा करवाने के लिए भी अलग जगह बनी हुई है, पैसे देकर कूपन खरीदने के काउंटर भी हैं (डेरे में कहीं भी सामान खरीदने के लिए इनका प्रयोग होता है।) और पास ही स्नानघर तथा शौचालयों की सुविधा भी है।

अधिकांश शैड मंड-पंडाल के पास बनाए गए हैं। डेरा-निवासियों के रिहाइशी इलाके से दूर ये शैड इसलिए यहाँ बनाए गए हैं ताकि निर्धारित सत्संग कार्यक्रमों के दौरान आनेवाली संगत आसानी से सत्संग और लंगर में पहुँच सके और पंडाल से दूर रहनेवाले डेरा-निवासियों के रोज़मर्रा के जीवन पर इसका प्रभाव न हो। रोज़मर्रा की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए इस इलाके में एक नया शॉपिंग कॉम्प्लैक्स बनाया जाएगा।

जत्थे में आनेवाले सेवादारों के लिए डेरे में दो शैड बनाए गए हैं। ये सेवादार खास मौकों पर मदद के लिए डेरे आते हैं। ये लोग खास सेवा के लिए पूरे भारत के कई गाँवों और शहरों से इकट्ठे

होकर आते हैं और अपनी सेवा के दौरान इकट्ठे रहते हैं। इन शैड में से हर एक में लगभग 16,000 सेवादार आराम कर सकते हैं। आम संगत के लिए और जत्थों के लिए कुल मिलाकर 15 शैड हैं जिनमें करीब-करीब 1,50,000 संगत रह सकती है।

पूरे-पूरे परिवार या फिर गाँव के लोग इकट्ठे आकर शैड में ठहर सकते हैं। यहाँ मेल-मिलाप और हँसी-खुशी का माहौल होता है। आप गाँव के लोगों को इकट्ठे बैठकर शब्द गाते देख सकते हैं और इसी शोरगुल के बीच चादर ओढ़े भजन-बंदगी में बैठे हुए भी कुछ लोग नज़र आएँगे।

ख़राब मौसम में डेरे के सारे रिहाइशी घर संगत के लिए खोल दिए जाते हैं, यहाँ तक कि मंड-पंडाल का भी कुछ हिस्सा खोल दिया जाता है जिसमें 75,000 लोग आराम कर सकते हैं।

शैड के अतिरिक्त जो संगत सराय या हॉस्टल में ठहरती है चाहे वह एक रात के लिए ठहरे या महीने भर के लिए, उनके लिए रिहाइश बुक करने का कार्य कंप्यूटर द्वारा किया जाता है। संगत के लिए तीन सराय उपलब्ध हैं, जहाँ सोने के लिए बड़े-बड़े हाल वाली बहुत-सी इमारतें हैं जिनमें बेड लगाए गए हैं। इस समय सरायों में 13,000 व्यक्ति ठहर सकते हैं। कुछ बड़े कमरे केवल महिलाओं के लिए, कुछ केवल पुरुषों के लिए और कुछ परिवारों के लिए या इकट्ठी होकर आनेवाली संगत के लिए हैं। तीन सरायों और तीन शैडों के लिए एक शॉपिंग कॉम्प्लैक्स है जिसमें जनरल स्टोर, फल और कोल्ड ड्रिंक्स का स्टाल, बुक स्टाल और फ़ोटो स्टाल, टेलीफ़ोन बूथ तथा डिस्पेंसरी हैं।

भारतीय संगत दस हॉस्टलों में भी कमरे बुक करवा सकती है जिनमें कुल मिलाकर 2,175 कमरे हैं जहाँ 5,500 व्यक्ति ठहर सकते हैं। हर कमरे में दो या तीन व्यक्ति ठहर सकते हैं; कुछ बड़े कमरे भी हैं जिनमें पूरा परिवार ठहर सकता है। सभी कमरों का अपना अलग बाथरूम और अलमारी है। आनेवाले कुछ वर्षों में चार और हॉस्टल बनाए जाएँगे जिनमें से हर एक में 750 डबल रूम होंगे। इन हॉस्टलों में कैंटीन की सुविधा भी है जहाँ चाय, काफ़ी, हलका-फुलका नाश्ता मिलता है। इसके साथ ही कपड़ों की धुलाई, टेलीफ़ोन और रेलवे स्टेशन तक आने-जाने के लिए गाड़ियों की सुविधा भी उपलब्ध है। विदेश से आनेवाली भारतीय मूल की संगत (NRI) डेरे द्वारा दी गई ऑन-लाइन बुकिंग सेवा द्वारा इन हॉस्टलों में कई महीने पहले ही अपने कमरे बुक करवा लेती है।









सामान जमा करवाते हुए।









शैड में इतने शोरगुल के बीच संगत भजन-बंदगी के लिए कुछ शांत पल ढूँढ़ ही लेती है।

सराय और शैड में ठहरी संगत के लिए डेरे में लगभग 6,000 स्नानघर और 9,000 शौचालय बनाए गए हैं।





अकॉमोडेशन विभाग



भारत से और विदेशों से आनेवाली भारतीय मूल की संगत जो सराय या हॉस्टल में ठहरना चाहती है, उनकी बुकिंग का कार्य अकॉमोडेशन विभाग करता है। संगत की सुविधा के लिए डाकखाना और रेलवे बुकिंग ऑफिस भी अकॉमोडेशन विभाग के पास ही बनाए गए हैं। बारिश और धूप से बचाव के लिए इन विभागों के बीच में एक बहुत बड़ा अहाता है, जहाँ संगत के बैठने के लिए काफ़ी बेंच लगाए गए हैं ताकि वे आराम से प्रतीक्षा कर सकें।









सराय के आसपास की चहल-पहल।



ऊपर: सराय में बुकिंग के लिए खड़ी संगत।





हॉस्टल 10-11



एन.आर.आई. संगत ज़्यादातर इन्हीं हॉस्टलों में ठहरती है। हर एक हॉस्टल में 750 कमरे हैं। आनेवाले सालों में ऐसे चार और हॉस्टल बनाए जाएँगे। हर कमरे के साथ बाथरूम है और हलके-फुलके नाश्ते और स्नैक्स के लिए एक छोटी कैंटीन भी है। भारत के अलग-अलग प्रदेशों से आनेवाली कुछ संगत भी इन हॉस्टलों में ठहरती है।









हॉस्टल 10-11 का भीतरी भाग।



ऊपर: हॉस्टल 10 और 11 में ठहरी संगत आम तौर पर लौड़ी की सेवा करती है।

नीचे: हॉस्टल कैंटीन में चाय-नाश्ता लेती संगत।



हॉस्टल 1-5

हॉस्टल 1-5 में भी देश-विदेश से आनेवाली संगत ठहरती है। यहाँ भी हर कमरे के साथ बाथरूम की सुविधा है। सबके इस्तेमाल के लिए एक छोटी कैंटीन और बीचोबीच खुली जगह भी है। जो संगत अपने आवास के दौरान डेरे के विभिन्न विभागों में सेवा करती है, उनके लिए यह हॉस्टल बहुत सुविधाजनक है।









हॉस्टल 6

विदेशी संगत हॉस्टल 6 में ठहरती है जो डेरे के ऐतिहासिक इलाके के पास बनाया गया है। यह एक शांत जगह है जहाँ बगीचे, घास के खुले मैदान और कई इमारतें हैं। यहाँ न केवल विदेशी संगत को ठहराया जाता है बल्कि इसमें ऑफिस, डाइनिंग रूम, ऑडिटोरियम, लॉज, डिस्पेंसरी तथा कपड़ों की धुलाई की सुविधाएँ भी हैं।

हर साल (अक्टूबर से अप्रैल तक) चार भंडारों में हर भंडारे पर विदेशों से लगभग 600 मेहमान यहाँ पहुँचते हैं। कुछ सेवादार डाइनिंग हाल में सेवा करते हैं और कुछ ऐडमिनिस्ट्रेशन, मेन्टेनेन्स और हाउस कीपिंग की सेवा करते हैं। आए हुए मेहमान भी अपनी इच्छा से सेवा करते हैं और कपड़ों की धुलाई, रसोईघर, डाइनिंग रूम, डिस्पेंसरी और बगीचों में सहायता करते हैं। कुछ मेहमान डेरे के अंग्रेज़ी प्रकाशन विभाग में भी सेवा करते हैं, वे कंप्यूटर के कार्य में भी सहायता करते हैं।









ऊपर: हॉस्टल 6 में सेवा करते हुए।
नीचे: हॉस्टल 6 का ऑडिटोरियम।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि डेरा एक आश्रय है, एक ऐसी जगह जहाँ अध्यात्म के मार्गदर्शन के लिए लोग देहधारी सतगुरु की शरण में आते हैं। संगत के रहने की ज़िम्मेदारी को डेरा बड़ी गंभीरता से लेता है, ताकि संगत दुनियावी चिंताएँ और परेशानियाँ भुलाकर संतों के उपदेश को ग्रहण कर सके।





हर सुख-सुविधा का ध्यान



“संगत इस उम्मीद से सेवा नहीं करती कि उन्हें कोई इनाम मिलेगा। वे प्रेमभाव में आकर सेवा करते हैं, सेवा प्रेम ही तो है; वे इसके बदले कभी कुछ नहीं माँगते। उन्हें चाहे जितनी भी बेआरामी हो वे कभी शिकायत नहीं करते। वे हमेशा संतुष्ट रहते हैं और सेवा करने में ही खुश रहते हैं।”

महाराज चरन सिंह जी





डेरे में सारा कार्य सेवा द्वारा ही होता है। यहाँ हर कार्य केवल देने की ही इच्छा से होता है, बदले में कुछ पाने की चाह से नहीं। वह कार्य चाहे लंगर में खाना पकाने का हो, पुरानी किताबों के रखरखाव का हो, सड़कों की सफ़ाई, कंप्यूटर सिस्टम को व्यवस्थित करने का या नए निर्माण कार्य के लिए ईंटें तोड़कर रोड़ी बनाने का हो। चाहे कोई कारीगर है या नहीं, पढ़ा-लिखा है या अनपढ़, चाहे उसे नामदान मिला है या नहीं; यहाँ तरह-तरह की सेवा उपलब्ध है। अपने-अपने हालात और क्षमता के मुताबिक हर किसी के लिए कुछ न कुछ सेवा ज़रूर है। सभी साथ मिलकर बड़ी खुशी से सेवा करते हैं। पूरे डेरे में प्रेम, उत्साह और करुणा की तरंगें व्याप्त हैं। इससे अपनेपन का भाव पैदा होता है और यही भाव डेरे के अस्तित्व का आधार है। हुज़ूर महाराज चरन सिंह जी ने एक बार कहा था: “हम सभी सेवादार हैं, हम सभी हमसफ़र हैं, हम सभी को एक दूसरे की मदद करनी है। हम सब इस संस्था से जुड़े हैं, इसलिए हम सब सेवादार हैं।”

लगभग 1500 सेवादार स्थायी रूप से डेरे में रहते हैं। इनमें कुछ अकेले और कुछ परिवार सहित हैं। इनमें से अधिकांश अपनी इच्छा से रिटायर होकर यहाँ सेवा करने के लिए आए हैं। अन्य कुछ सेवादार जिनकी आमदनी का कोई साधन नहीं है, उन्हें कुछ तनख्वाह भी दी जाती है। सभी डेरा-निवासियों को निःशुल्क सेहत संबंधी सुविधाएँ (सेहत-बीमा सहित), उनके बच्चों को स्कूली शिक्षा और बुजुर्गों तथा शारीरिक रूप से असमर्थ व्यक्तियों की निजी देखभाल की सुविधाएँ दी जाती हैं। डेरा-निवासियों को रहने के लिए घर दिए गए हैं और उनकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए डेरे के अंदर ही खरीदारी की भी सुविधा है।





~

“जब बड़े महाराज जी ने सत्संग-घर बनवाने की योजना सबके सामने रखी तो एक अमीर ठेकेदार ने कहा कि यह पूरी इमारत वह खुद बनवा देगा। महाराज जी ने उसके इस प्रस्ताव को यह कहकर मना कर दिया: ‘मैं चाहता हूँ कि हर एक को, ग़रीब से ग़रीब सत्संगी को भी सेवा में कुछ न कुछ देने का मौक़ा मिले चाहे वह 50 पैसे ही क्यों न हों। मैं यह भी चाहता हूँ कि सभी सत्संगी चाहे अमीर हों या ग़रीब, निर्माण कार्य में ज़रूर भाग लें, भले ही वे एक मुट्ठी रेत ढोने का काम करें या कुछ ईंटें उठाने का। उनकी छोटी से छोटी कोशिश भी मेरे लिए बहुत क़ीमती है। उनके पसीने की एक बूँद भी मेरे लिए अनमोल है। यह प्रेम और भक्ति की सेवा है।”

दीवान दरियाई लाल कपूर, धरती पर स्वर्ग



डेरा एक सुव्यवस्थित कालोनी है, जहाँ हर कार्य के लिए विशेष विभाग हैं जिनमें अलग-अलग स्तर के सेवादार काम करते हैं। इन्हें अलग-अलग कार्य सौंपे गए हैं। मक़सद हर काम को सुचारू रूप से करने का है, लेकिन साथ ही साथ इससे कई लोगों को सेवा का मौक़ा भी मिलता है।

कुछ लोग खुली सेवा करते हैं यानी वे किसी निश्चित कार्यक्रम के मुताबिक़ सेवा करने के लिए बाध्य नहीं हैं, परंतु हर हफ़्ते कुछ समय सेवा में देते हैं। उदाहरण के लिए ऐसी महिला जिसके स्कूल जानेवाले बच्चे हों, वह खुली सेवा कर सकती है। खुली सेवा में तरह-तरह की सेवाएँ उपलब्ध हैं। रोज़मर्रा के कार्यों के लिए बहुत-से विभाग खुली सेवा करनेवाले सेवादारों पर निर्भर हैं।

बैज सेवादार वे हैं जिनकी पक्की सेवा है, परंतु ये डेरे से बाहर रहते हैं और साल में निर्धारित सत्संगों के दौरान सेवा के लिए डेरे अवश्य पहुँचते हैं।

एक और श्रेणी जत्था सेवादारों की है जो डेरे की घटती-बढ़ती जनसंख्या का अहम हिस्सा हैं। जब किसी बड़ी योजना पर कार्य शुरू हो जाता है, जैसे सड़कों पर कोलतार बिछाना या कोई बड़ा निर्माण कार्य करना तो ऐसी सेवा के लिए नज़दीक के क़स्बों या दूसरी जगहों से सैकड़ों सेवादार पहुँच जाते हैं। ये लोग छोटे-बड़े ग्रुप में आते हैं।

इनके रहने के लिए खास जगह बनाई हुई है। इसके अलावा ये लोग और सेवाएँ भी करते हैं, जैसे भारी मशीनरी और उपकरणों को चलाना, लंगर में सेवा करना और डेरे के खेतों में काम करना: हल चलाना और पौध लगाना, फ़सल की देखभाल और कटाई आदि। हर जगह से आए जत्थों को अलग-अलग खेत दिए जाते हैं, फिर अपने-अपने खेत की देखरेख करना उसी जत्थे की ज़िम्मेदारी होती है। इस सेवा के लिए वे अपने सत्संग-सेंटर के सेवादारों के साथ मिलकर बारी-बारी से लगातार यहाँ आते हैं। सन 2011-12 में लगभग 5 लाख जत्था सेवादारों ने डेरे की अलग-अलग गतिविधियों में सहयोग दिया।

कुछ कार्य पास के शहरों और क़स्बों के सत्संग-सेंटरों को सौंपे गए हैं; जैसे शामियाना रँगना, निर्माण सामग्री तैयार करना और उचित मूल्य पर ख़रीदारी करना (उदाहरण के लिए चाय, तेल, दाल, टाट, लोहे के पाइप और सीमेंट)।

ब्यास के सभी संत-सतगुरुओं के विकासशील सामाजिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए मौजूदा सतगुरु नारी के अधिकारों को बहुत अधिक महत्त्व दे रहे हैं। महिलाएँ सभी सेवा कार्यों में समान रूप से योगदान देती हैं जिनमें इमारतें और सड़कें बनाना, कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर का विकास करना, किताबें लिखना, आर्किटेक्चर डिज़ाइन तथा व्यवस्था संबंधी अन्य सेवाएँ शामिल हैं। बहुत-से विभागों में महिलाएँ इंचार्ज के रूप में सेवा कर रही हैं; यहाँ सत्संगकर्ता और पाठी के रूप में भी महिलाएँ सेवा कर रही हैं।







बायें: सत्संग जाते हुए मदद के लिए बढ़ाया गया हाथ।
ऊपर: सड़कों की सफ़ाई एक लगातार चलनेवाली सेवा।
नीचे: लंगर में भूसी का ईंधन के रूप में इस्तेमाल।

लगभग पाँच लाख जत्था सेवादार नियमित रूप से डेरे के विभिन्न कार्यों में सहयोग देते हैं। पूरी कालोनी जत्था सेवादारों की सेवा पर निर्भर है। वास्तव में साल भर इन्हीं सेवादारों के योगदान से डेरे का कार्य चलता है।





रिहाइश

डेरे में रहनेवाले सेवादारों को उनके परिवार के सदस्यों के मुताबिक निःशुल्क रहने के लिए घर दिए जाते हैं। समय की माँग को ध्यान में रखते हुए डेरे में पहले बने हुए बहुत से एक मंज़िला घरों को तोड़कर उनकी जगह नए दो मंज़िला घर बनाए जा रहे हैं; ये नए डिज़ाइन के हैं और इससे ज़मीन का भी बेहतर इस्तेमाल किया गया है। डेरे में बने घर खुले, आधुनिक और आरामदायक हैं। बहुत-से नए घर दो मंज़िला हैं जिनमें एक घर ऊपर है और एक नीचे। इन घरों के बाहरी हिस्से में ईंट जैसे लाल और हलके दूधिया रंग के पेंट का प्रयोग किया गया है। सभी रिहाइशी इमारतों का एक जैसा आर्किटेक्चर यहाँ का शांत वातावरण बनाने में सहयोग देता है।

चूँकि डेरा-निवासी सेवादारों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है, इसलिए इनके रहने के लिए आवश्यक सुविधाएँ जुटाना ज़रूरी हो गया है। इसी लिए डेरा-निवासियों के रिहाइशी इलाक़े में एक अलग शॉपिंग कॉम्प्लैक्स बनाया जाएगा ताकि कालोनी में गाड़ियों की आवाजाही कम से कम रहे।









अलग-अलग तरह की रिहाइश।

सेहत संबंधी सुविधाएँ





डेरे के सेवादारों और उनके परिवार की हर साल व्यापक रूप से सेहत संबंधी जाँच की जाती है। मरीज़ों के इलाज और सेहत की जाँच की सेवा के लिए देश-विदेश से डाक्टर तथा अन्य तकनीशियन डेरे आते हैं। छोटे लेकिन आधुनिक ढंग से बने डेरा अस्पताल में डेरा-निवासियों को सेहत संबंधी सुविधाएँ निःशुल्क उपलब्ध हैं। इस अस्पताल में एक ऑपरेटिंग रूम, लेबोरेटरी, होम्योपैथी क्लिनिक, दाँतों की चिकित्सा और फ़िज़ियोथैरेपी आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। ज़रूरत पड़ने पर डेरा अस्पताल ऐमर्जेंसी के मरीज़ों को कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर बने ब्यास अस्पताल में भेजता है, जो काफ़ी बड़ा है और जहाँ इलाज के लिए सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। (डेरे में आनेवाली संगत के लिए भी ऐमर्जेंसी इलाज की सुविधा उपलब्ध है।)

सन 1965 में बने डेरे के नेचर क्योर अस्पताल में डेरा-निवासियों का आहार, व्यायाम और प्राकृतिक उपायों द्वारा उपचार किया जाता है। (पुराने डेरे की इमारतों की तरह बनी इस इमारत की हाल ही में मरम्मत की गई है; यह कालोनी के उस इलाके का हिस्सा है जिसे ऐतिहासिक इलाका कहा जाता है।)

ज़रूरत के मुताबिक़ डेरा स्थायी तौर पर रहनेवाले सेवादारों को घर में उनके देखभाल के प्रबंध की, सुनने की मशीन तथा अस्पताल से आने-जाने के लिए गाड़ी की सुविधा देता है। बुजुर्गों को चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए और उनके मनोरंजन के लिए सेवादार विविध प्रकार की गतिविधियों का प्रबंध करते हैं।



बायें: डेरा अस्पताल और मरीज़ों का रजिस्ट्रेशन।
ऊपर: सेहत की जाँच और दाँतों की देखभाल।



हुजूर महाराज चरन सिंह जी द्वारा बनवाया गया ब्यास का अस्पताल (जिसका निर्माण कार्य 1986 में पूरा हुआ) डेरे की चिकित्सा सेवाओं का आधार है। यहाँ 25 किलोमीटर के आसपास के क्षेत्र के निवासियों का इलाज किया जाता है। यहाँ आनेवाले हर मरीज़ का चाहे वह सत्संगी है या नहीं, अमीर है या गरीब, किसी भी धर्म या जाति का क्यों न हो, बिना किसी भेदभाव के अच्छे से अच्छा इलाज निःशुल्क किया जाता है। हुजूर महाराज जी ने जान-बूझकर यह अस्पताल डेरे से बाहर लगभग छः किलोमीटर की दूरी पर 35 एकड़ ज़मीन पर बनवाया था, ताकि आसपास के गाँवों के लोग मुफ्त इलाज का फ़ायदा उठा सकें और उनके मन पर कोई ऐसा बोझ न हो कि डेरे के अस्पताल में इलाज की सुविधा के लिए संतमत को जानना या डेरे आना ज़रूरी है।





ऊपर: ब्यास अस्पताल
बायें: नेचर क्योर अस्पताल
नीचे: बुजुर्गों की देखभाल

शिक्षा और मनोरंजन

द पाथ सीकज़ स्कूल मौजूदा सतगुरु द्वारा हाल ही में शुरू किया गया है। एक बहुत बड़े परिसर में स्थित यह स्कूल अप्रैल 2014 से प्राइमरी कक्षा तक के बच्चों के लिए शुरू किया गया है; बाद में सैकेंडरी स्तर तक इसका विस्तार किया जाएगा। इसमें कुल मिलाकर 1200 बच्चे शिक्षा प्राप्त कर पाएँगे। यह स्कूल डेरा-सेवादारों के और ब्यास अस्पताल के सेवादारों और कर्मचारियों के बच्चों के लिए है। स्कूल उच्च शिक्षा प्राप्त, अनुभवी अध्यापकों और प्रबंधकों द्वारा चलाया जा रहा है, स्कूल के स्टाफ़ को वेतन दिया जाता है। स्कूल में आधुनिक लेबोरेटरी और कंप्यूटर हैं। (जब तक स्कूल का पूरा विस्तार नहीं हो जाता, डेरा-निवासी कालोनी से बाहर के स्कूलों में बच्चों की शिक्षा जारी रखेंगे और इन बच्चों के स्कूल की फ़ीस डेरा अदा करेगा)। यहाँ बच्चों को भारत के प्रमाणिक शिक्षा बोर्ड के स्तर की उत्तम शिक्षा दी जाएगी जिसमें खेल-कूद भी शामिल हैं। यह नया स्कूल डेरे के खेल-कूद परिसर (स्पोर्ट्स कॉम्प्लैक्स) के पास बड़े सुविधाजनक स्थान पर बनाया गया है, जिसमें खेल का मैदान और जिम्नेज़ियम भी हैं। अध्यापकों और प्रबंध-व्यवस्था करनेवाले स्टाफ़ के लिए विशेष घर बनाए गए हैं।









खेल-कूद परिसर (स्पोर्ट्स कॉम्प्लैक्स)

डेरे के खेल-कूद परिसर में जॉगिंग ट्रैक है। यहाँ फुटबाल मैदान और बैडमिंटन, टेनिस तथा बास्केटबाल कोर्ट बनाए गए हैं। युवा यहाँ फुटबाल, क्रिकेट, बास्केटबाल और बैडमिंटन आदि खेलते हैं, उन्हें इन खेलों के लिए यूनिफ़ॉर्म दी जाती है। डेरा-निवासियों के व्यायाम के लिए जिम भी है।





लाइब्रेरी

संत-सतगुरु का मुख्य उद्देश्य शिष्यों की आत्मिक उन्नति है जिसका वे सत्संग और सेवा के माध्यम से ध्यान रखते हैं, लेकिन साथ ही साथ उनके मानसिक पोषण के लिए पुस्तकों तथा अन्य प्रकाशित सामग्री की भी सुविधा दी गई है। संगत के बौद्धिक विकास के लिए डेरा लाइब्रेरी का विशेष महत्व है। हवादार और खुशनुमा माहौल वाली यह लाइब्रेरी डेरे के बीचोबीच बनी हुई है जहाँ डेरा-निवासी तथा संगत सभी इसका लाभ उठा सकते हैं। इसमें हिंदी, अंग्रेज़ी और कई अन्य भाषाओं की पुस्तकें हैं। पुस्तकों के रखरखाव के लिए रेस्टोरेशन सेक्शन है और साथ ही पुरालेख विभाग (आर्काइव्स डिपार्टमेंट) भी है। इस समय लाइब्रेरी में 70,000 पुस्तकें हैं, जबकि इसकी क्षमता पाँच लाख किताबों तक की है। इस लाइब्रेरी के लिए देश-विदेश में बड़े पैमाने पर पुस्तकों के संग्रह का कार्य चल रहा है। सेवादार अध्यात्म और विश्व के विभिन्न धर्मों से संबंधित पुस्तकों का अध्ययन करके लाइब्रेरी के लिए पुस्तकें खरीदने में जुटे हैं।











ऊपर: किताबों की स्कैनिंग
नीचे: डेरे का पुरालेख विभाग
(आर्काइव्ज़ डिपार्टमेंट)

प्रकाशन विभाग

डेरा संतमत और अन्य आध्यात्मिक विचारधाराओं से जुड़े संत-महात्माओं से संबंधित पुस्तकें प्रकाशित करता है। यहाँ से पहली पुस्तक सार बचन बाबा जैमल सिंह जी के मार्गदर्शन में सन 1902 में प्रकाशित हुई थी जिसकी 500 प्रतियाँ ही छापी गई थीं। इसके बाद पुस्तकों का प्रकाशन कार्य जारी तो रहा लेकिन इस क्षेत्र में ज्यादा तरक्की नहीं हुई; सन 1951 तक डेरे ने अंग्रेज़ी में पाँच या छः किताबें और पंजाबी में दो किताबें ही प्रकाशित कीं। 1970 के दशक में हुज़ूर महाराज चरन सिंह जी ने विधिवत रूप से प्रकाशन विभाग की स्थापना की, ताकि जहाँ तक हो सके हर भाषा में संतमत की किताबें उपलब्ध हों। 1970 के अंत तक अंग्रेज़ी भाषा सहित भारत की लगभग हर भाषा में किताबें प्रकाशित होने लगीं। विद्वान सेवादारों का एक बहुत बड़ा ग्रुप डेरे में रहते हुए भी और डेरे से बाहर रहते हुए भी अंग्रेज़ी तथा भारत की लगभग सभी भाषाओं में किताबें लिखने का और संपादन करने का कार्य कर रहा है। कई किताबों का अफ्रीका, एशिया और यूरोप में बोली जानेवाली 25 भाषाओं में अनुवाद किया गया है। प्रकाशन विभाग हुज़ूर महाराज चरन सिंह जी के सत्संगों की हिंदी और पंजाबी में ऑडियो सी.डी. और डी.वी.डी. बनाने के साथ-साथ उनके अंग्रेज़ों के साथ सवाल-जवाब की मीटिंगों के चुने हुए अंशों की भी ऑडियो सी.डी. और डी.वी.डी. तैयार करता है। ये किताबें, ऑडियो सी.डी., डी.वी.डी. और ब्यास के संत-सतगुरुओं की चुनी हुई कुछ तस्वीरें डेरे में और विश्वभर के सत्संग सेंटर में लागत मूल्य पर बेची जाती हैं।







आम सेवाएँ



जनरल स्टोर और फल सब्जियों के काउंटर।



आम ज़रूरत की चीज़ें, खाद्य पदार्थ, फल और सब्ज़ियाँ दुकानों पर मिलती हैं। ये सारी वस्तुएँ बाज़ार से सस्ते दामों पर बेची जाती हैं। कपड़ों की धुलाई और ड्राइक्लीन, दर्ज़ी, मोची, नाई, समाचार पत्रों की प्राप्ति की सुविधा के साथ-साथ यहाँ एक डाकख़ाना भी है। भारत के तीन अलग-अलग बैंक ए.टी.एम. सहित सभी सेवाएँ प्रदान करते हैं।



डेरे के अंदर ही पेट्रोल पंप, फ़ायरब्रिगेड और ऍंबुलेंस की सुविधा है। मोटर गैरेज में सेवादार डेरे की गाड़ियों की धुलाई और मरम्मत का कार्य करते हैं; इनमें साइकिल, रिक्शा, स्कूटर, मोटरकार, बस, ट्रक और ट्रैक्टर शामिल हैं। (डेरा-निवासी अपनी गाड़ियों की मरम्मत और रखरखाव का मूल्य स्वयं चुकाते हैं।) यह सच है कि पूरी कालोनी में कहीं भी कुछ व्यर्थ नहीं जाने दिया जाता जैसे कि कुछ पुरानी गाड़ियों के कलपुर्जों का इस्तेमाल करके दूसरी गाड़ियों का नया रूप दिया जाता है। मोटर गैरेज डेरे के अंदर गाड़ियों की बुकिंग की व्यवस्था करता है और उनका रिकार्ड रखता है।









डरे में घूमते हुए।

खोया और पाया



खोया और पाया विभाग को जो भी गुमशुदा वस्तु मिलती है उसका पूरा रिकार्ड रखा जाता है, जिसमें तिथि और मिलने की जगह भी दर्ज की जाती है (डेरा-निवासी और संगत इस सुविधा का फ़ायदा उठाते हैं)।



रेलवे विभाग



संगत की सुविधा के लिए डेरा रेलवे विभाग अतिरिक्त रेल सेवाएँ उपलब्ध करवाने के लिए भारतीय रेलवे विभाग के साथ संपर्क बनाए रखता है। टिकटों की अत्यधिक माँग होने के कारण सरकार की ओर से डेरे में कंप्यूटर द्वारा की जानेवाली आरक्षण व्यवस्था है। भारतीय रेलवे विभाग के साथ मिलकर डेरे ने ब्यास स्टेशन पर यात्रियों की सुविधा के लिए काफ़ी सुधार किए हैं।



सफ़ाई व्यवस्था





डेरा-निवासी डेरे की साफ़-सफ़ाई के प्रति बहुत सतर्क हैं। पूरे डेरे में अलग-अलग रंगों के कूड़ादान रखे गए हैं, ताकि वे गलनेवाले और न गलनेवाले कूड़े-कचरे का ठीक से निपटारा कर सकें। कूड़ा-कचरा हर रोज़ उठाया जाता है और इसे बीनकर या तो फिर से इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया जाता है या इसे बेच दिया जाता है। गलनेवाले कूड़े की खाद बनाई जाती है और बाक़ी कूड़े का जैसे उचित समझा जाए निपटारा किया जाता है। जलथे में आए सेवादार, युवा स्त्री-पुरुष, ट्रकों में इधर-उधर घूम-घूमकर ऐसे कचरा इकट्ठा करते हैं मानो वे मोटरगाड़ी की सैर कर रहे हों। उनका उत्साह देखते ही बनता है।

रीसाइकलिंग (इस्तेमाल की हुई चीज़ों का पुनःउपयोग)

डरे में जहाँ तक हो सके ऐसे तरीके अपनाने पर बल दिया जाता है जो स्थायी हों और पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल हों। डरे में कई प्रकार का कृषि-उत्पादन किया जाता है। इनकी सिंचाई के लिए नालियों का गंदा पानी साफ़ करके प्रयोग में लाया जाता है। कुछ भी व्यर्थ नहीं जाने दिया जाता। पुरानी ईंटों को तोड़कर नए निर्माण कार्य के लिए इस्तेमाल किया जाता है। गंदगी और कूड़े-कचरे को फिर से प्रयोग में लाने के लिए तैयार किया जाता है। लंगर तथा फल-सब्जियों के स्टाल से निकले गलनेवाले कचरे को खाद में

बदलने के लिए इन्हें बड़े-बड़े गड्ढों में डाला जाता है। भूमिगत सीवरेज से खाद बनाने के लिए उसे पाइपों द्वारा ऑक्सीडेशन पॉन्ड में डाल दिया जाता है। कैन, काँच, प्लास्टिक और लोहे आदि की चीज़ें जो सड़नशील नहीं हैं, उन्हें स्क्रेप डिपार्टमेंट में भेजा जाता है। यहाँ इन चीज़ों को जहाँ तक हो सके फिर से इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया जाता है, जैसे दूध के खाली कैन और डिब्बों को बीज बोने के लिए नर्सरी में भेजना।





संस्कार



किसी डेरा-निवासी का देहांत होने पर डेरा उसके अंतिम संस्कार, अस्थि विसर्जन और अंतिम भोग की व्यवस्था करता है।





योजना और विकास

बाबा जैमल सिंह जी ने डेरे में सबसे पहला कुँआ बनवाते समय उसकी ईंटों से लेकर बाक्री खर्च का पूरा हिसाब रखा; उनकी तरह ही डेरे के सभी सतगुरुओं ने संगत की ज़रूरतों को और डेरे के विकास के हर पहलू की खुद देखरेख की है।

हुज़ूर महाराज चरन सिंह जी के समय में डेरे का निरंतर विस्तार होता रहा, जैसे डेरे के साथ वाली ज़मीन जब भी उपलब्ध हुई उसे या तो ख़रीद लिया गया या फिर उसके बदले ज़मीन देकर ले लिया गया। डेरा-निवासियों के लिए मकान बनवाना, संगत के लिए रिहाइश का प्रबंध करना, अन्य सुविधाएँ प्रदान करना, इन सभी में लगातार बढ़ोतरी होती रही है।



पिछले सौ वर्षों से संगत की बढ़ती ज़रूरतों के अनुसार डेरे का भी निरंतर विकास होता जा रहा है। जैसे संगत की बढ़ती भीड़ के लिए बड़ा सत्संग-पंडाल, ज़्यादा से ज़्यादा रिहाइशी स्थान, ज़्यादा से ज़्यादा संगत को खाना खिलाने की सुविधा और मूलभूत सुविधाओं की पूर्ति, ताकि लाखों की संख्या में आनेवाली संगत की व्यवस्था की जा सके। यहाँ आनेवाली संगत की संख्या

निर्धारित सत्संगों के अनुसार घटती-बढ़ती है, इसलिए ज़रूरत के अनुसार मूलभूत सुविधाएँ जुटाने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। भविष्य की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए पिछले कुछ वर्षों से डेरे की प्रबंध योजनाएँ और अधिक व्यवस्थित और सक्रिय हो गई हैं। अब सारी योजनाएँ अगले बीस वर्षों की ज़रूरतों को ध्यान में रखकर बनाई जा रही हैं।



सन 1990 में किसी ने डेरे में पिछले पाँच वर्षों से बड़ी तेज़ गति से हो रहे भारी विकास के बारे में हुज़ूर महाराज चरन सिंह जी से प्रश्न किया तो उन्होंने कहा: “हम अभी भी विस्तार कर रहे हैं और अभी तक आखिरी मुकाम तक नहीं पहुँचे हैं। मैं जानता हूँ कि (डेरे की) कृषि भूमि लगभग 1,000 एकड़ है, ज़्यादातर ज़मीन पर पेड़ उगाए गए हैं और लगभग 350 से 400 एकड़ तक की ज़मीन में सब्ज़ियाँ उगाई जाती हैं। पेड़ मनुष्य को जीवन देते हैं। ये बड़े मनोहर और सुंदर लगते हैं, साथ ही पक्षियों का भी बचाव करते हैं।”

वास्तव में डेरे में मूलभूत सुविधाओं के साथ-साथ, पेड़-पौधों और प्राकृतिक दृश्यों का भी विकास हुआ है। डेरे के निरंतर विकास में व्यावहारिकता और सादगी के जिन मुख्य आदर्शों पर बल दिया गया है, उन्हीं आदर्शों को ध्यान में रखते हुए यहाँ लगाए गए लाखों पेड़-पौधे पंजाब की जलवायु के अनुकूल हैं और इन्हें उगाना और लगाना आसान है।

एक और महत्वपूर्ण नियम यह है कि जहाँ तक हो सके बुनियादी ढाँचा और सारी सुविधाएँ बहु-उपयोगी हों। उदाहरण के लिए यहाँ की धरती को ऐसा सुंदर रूप दिया गया है कि वहाँ लोग आराम कर सकते हैं और बच्चे भी खेल सकते हैं: लोग गर्मी के मौसम में पेड़-पौधों की छाया में आराम से दूर तक पैदल चल सकते हैं। ढलानों को मज़बूत किया गया है और भीड़ को नियंत्रित करने के लिए यहाँ नाके लगाए गए हैं। हरियाली यहाँ की विशेषता है। डेरे के लगभग आधे भाग में पेड़-पौधे, सुंदर फूल हैं जो वातावरण को सुंदर और शांत बनाते हैं।

संगत की बढ़ती हुई ज़रूरतों के मुताबिक डेरे का कई चरणों में विकास किया गया है। यहाँ के सुंदर प्राकृतिक दृश्यों की तरह यहाँ की इमारतों की बनावट में भी सादगी है। जब भी कोई इमारत पुरानी हो जाती है तब उसे या तो गिरा दिया जाता है या फिर किसी और काम में लाया जाता है।



डेरें में सहज ढंग से विकास के बहु-उपयोगी प्रयोग का एक सुंदर उदाहरण है—हवाघर। इसे पहले शैड के रूप में बनाया गया, लेकिन जब योजना बनानेवालों को लगा कि यहाँ शैड का होना ठीक नहीं है क्योंकि इस इलाक़े में बहुत भीड़ रहती है, तब उन्होंने योजना बदल दी। इसकी छत हटा दी गई और नीचे हरा-भरा लॉन बना दिया गया और छत को आधार देनेवाले खंभों को बेलों से ढक दिया गया। हवाघर अब संगत के बैठने के लिए छायादार और आरामदायक स्थान बन गया है।

हालात के मुताबिक़ बदलने का एक और उदाहरण है सत्संग-पंडाल। निर्धारित सत्संग कार्यक्रमों के दौरान संगत की भारी भीड़ को देखते हुए प्रबंधकर्ताओं ने सत्संग का स्थान ही बदल दिया और साथ ही

नए सत्संग-पंडाल के पास ही संगत के लिए रिहाइश बना दी। यहाँ तक कि लंगर में जाने के लिए नज़दीक ही गेट भी बना दिए। इस तरह अब भारी भीड़ को ज़्यादातर डेरें के अंदरूनी इलाक़े में आने की ज़रूरत नहीं पड़ती। उनकी आवाजाही भी कम हो जाती है। इस तरह संगत आराम से आती-जाती है और किसी एक जगह भीड़ भी इकट्ठी नहीं होती।

हुज़ूर महाराज चरन सिंह जी संगत के लिए डेरें का कुछ इलाक़ा अलग रखना चाहते थे, ताकि डेरा-निवासियों के रिहाइशी इलाक़े में संगत की भारी भीड़ का प्रभाव न हो। मौजूदा सतगुरु के निर्देशानुसार इंजीनियरों और प्रबंधकर्ताओं ने इन योजनाओं को सफलतापूर्वक लागू किया है।



हवाघर में आराम करते हुए।

डेरे की रूपरेखा और संगत की आवाजाही

डेरे की रूपरेखा बड़ी सीधी-सादी है। किसी आर्किटेक्ट ने डेरे की तुलना पुराने ज़माने के ऐसे क़स्बे से की है जो चारों तरफ़ से सुरक्षित हैं। जिसकी चारदीवारी है (ईंटों की दीवार या फिर पौधों की बाड़) और गेट हैं जहाँ सुरक्षा का पूरा इंतज़ाम है। चारदीवारी के बाहर कार-पार्किंग है जो पूरी तरह सुरक्षित है। खेतों में रोज़मर्रा की ज़रूरत के अनुसार फ़सल उगाई जाती है। चारदीवारी के अंदर संगत की रिहाइश और भोजन आदि के प्रबंध के साथ-साथ संगत की देखरेख भी की जाती है।

जैसे-जैसे कालोनी के बीचोबीच बने पुराने डेरे से बाहर की ओर बढ़ते जाओ, चौड़ी सड़कें और बड़ी-बड़ी इमारतें दिखाई देने लगती हैं। पुराने डेरे की सड़कें तंग और गलियाँ छोटी थीं परंतु ये सुंदर दृश्य प्रस्तुत करती थीं। डेरे के नए इलाक़ों में शानदार खुली सड़कें और गोल-चौराहे आधुनिकता का परिचय देते हैं। सुंदर प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर ख़ूब चौड़ी और आपस में जुड़ी हुई मुख्य सड़कों पर संगत की भीड़ के साथ-साथ गाड़ियों और रिक्शों आदि के लिए भी काफ़ी जगह है।

डेरे की सड़कों का जाल यहाँ की 'खुली जगह, खुले मैदान' की योजना का मुख्य अंश है। इन सभी खुली जगहों तक पहुँचने के लिए सड़कें हैं जो डेरे की ख़ूबसूरती बढ़ाने के साथ-साथ इसकी रौनक भी बढ़ाती हैं। इन खुली सड़कों के कारण लोग आराम से इधर-उधर आ-जा सकते हैं। ख़ासकर शाम ढलने पर सड़कों और खुली जगहों पर ख़ूब चहल-पहल होती है। जवान और अथेड़ उम्र के लोग इकट्ठे बैठकर गपशप करते हैं, जबकि लड़के-लड़कियाँ अपने-अपने समूह में इधर-उधर घूमते हैं; हर कोई इस शांत और खुशनुमा माहौल का आनंद लेता है।

चूँकि डेरे में लोग ज़्यादातर पैदल चलते हैं इसलिए फ़ुटपाथ ख़ूब चौड़े बनाए गए हैं। इनके किनारों पर रेलिंग लगी है ताकि पैदल चलनेवाले लोग फ़ुटपाथों पर ही चलें, सड़कों पर नहीं। गाड़ियों को निर्देश देने के लिए सेवादर जगह-जगह खड़े होते हैं। वे लोगों को रास्ता भी बताते हैं और ख़ुशी-ख़ुशी बड़ी कुशलता से अनुशासन बनाए रखते हैं। जहाँ पैदल चलनेवालों तथा गाड़ियों को सड़क पार करने की ज़रूरत पड़ती है, वहाँ पैदल चलनेवालों की सुविधा के लिए भूमिगत रास्ते बनाए गए हैं ताकि संगत आराम से अपनी-अपनी जगह पहुँच जाए।



डेरे का नक्शा, 2014



तालिका

1.  मंड-पंडाल
2.  सत्संग शैड 1
3.  आवास के लिए शैड
4.  आवास के लिए सराय
5.  लंगर
6.  भोजन-भंडार
7.  कैंटीन
8.  स्नैक बार
9.  हॉस्टल
10.  लाइब्रेरी
11.  ऐडमिनिस्ट्रेशन बिल्डिंग और बैंक
12.  खरीदारी
13.  लंगर
14.  आटा मिल और अनाज गोदाम
15.  हवाघर
16.  सत्संग-घर
17.  हेरिटेज स्क्वेअर
18.  रेलवे और अकॉमोडेशन बुकिंग, डाकखाना और सुरक्षा विभाग
19.  सेवा समिति और खोया-पाया विभाग
20.  शौचालय और स्नानगृह
21.  गेट पर चैकिंग, सामान की स्कैनिंग और कंट्रोल रूम
22.  डेरे में उपलब्ध रिहाइश और प्रस्तावित रिहाइश
23.  स्कूल
24.  मनोरंजन की सुविधाएँ
25.  प्रस्तावित शॉपिंग सेंटर
26.  अस्पताल
27.  एयरपोर्ट
28.  ऑक्सीडेशन पॉन्ड
29.  गाड़ियों की पार्किंग
30.  नर्सरी
31.  शॉपिंग कॉम्प्लैक्स
32.  ईटों का भट्ठा
33.  गेट
34.  श्मशान-घाट
35.  वर्कशाप
36.  बिस्तरा शैड
37.  कोल्ड स्टोर
38.  फ़ायर स्टेशन, पेट्रोल पंप और गाड़ियों का रखरखाव
39.  सेंट्रल स्टोर
40.  अस्थि विसर्जन घाट
41.  मेन्टेनेन्स डिपार्टमेंट

डेरे का डिज़ाइन

डेरे की निर्माण शैली की अपनी विशेषता है। जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में देखा है, यहाँ की इमारतों का आर्किटेक्चर सीधा-सादा है। घर, हॉस्टल, सराय, शैड और एडमिनिस्ट्रेटिव बिल्डिंग के बाहरी हिस्से में एक जैसे गाढ़े लाल और दूधिया रंग के इस्तेमाल से डेरे में एकरूपता दिखाई देती है।

इसी तरह मंड-पंडाल की अति आधुनिक बनावट की झलक कुछ दूसरी इमारतों में भी नज़र आती है। ये इमारतें संगत को ठहराने के लिए बनाई गई हैं। इनका सुंदर आधुनिक डिज़ाइन पूरी तरह व्यावहारिक है: कम वज़न वाली स्टील ट्यूबों से बने स्पेस-फ्रेम का प्रयोग करने से थोड़े-से खंभों से ही ज़्यादा जगह घेर लेने में मदद मिलती है। इसकी लचीली बनावट के कारण भूकंप के झटकों से होनेवाले नुकसान से बचाव हो सकता है।

डेरे के ऐतिहासिक इलाके के अलावा बनी अन्य इमारतों की बनावट, इनकी उपयोगिता के अनुकूल है यानी इनके निर्माण में बनावट और उपयोगिता का सुंदर मेल है—चाहे वे बड़ी संख्या

में संगत के ठहरने के लिए शैड हों, चाहे कार्यालय हों या फिर वातानुकूलित रिसर्च लाइब्रेरी और कोल्ड स्टोर हों। फ़र्श की टाइलों और सीमेंट की जालियों से लेकर आराम से बैठने के लिए बाहर लगे बेंचों समेत हर चीज़ में एकरूपता है। ऐसा लगता है जैसे सुंदरता और उपयोगिता के संगम से निर्माण सामग्री और निर्माण कार्य का सरल तथा कारगर तालमेल पेश किया गया है। जब ब्यास अस्पताल बन रहा था तो एक बार हुज़ूर महाराज चरन सिंह जी ने निर्माण कला के बारे में बात करते हुए कहा—डेरे की इमारतें “सादी किंतु सुंदर” होनी चाहिए। आज भी डेरे की बनावट के लिए यही नियम लागू किया जाता है।

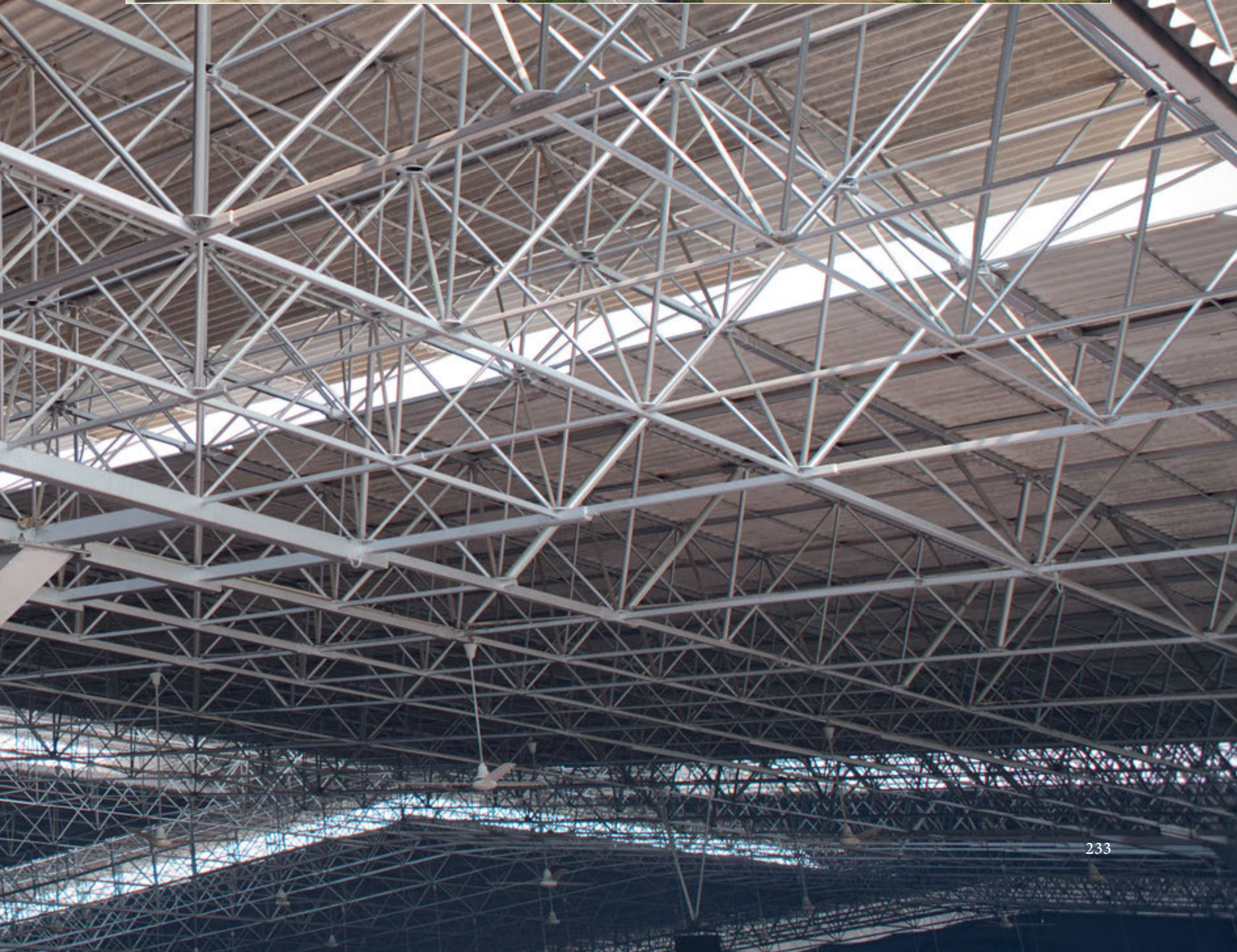
आर्किटेक्चर, लैंडस्केप डिज़ाइन, इंजीनियरिंग और निर्माण कार्य से संबंधित विभाग की देखरेख चीफ़ इंजीनियर करता है। यह विभाग डेरे में विभिन्न छोटी-बड़ी योजनाओं और निर्माण कार्यों से लेकर अन्य छोटे-छोटे निर्णय भी खुद ही लेता है, जैसे कि टाइलों और सीमेंट के ऐसे रंग चुनना जो समय बीतने पर भी फीके न पड़ें।





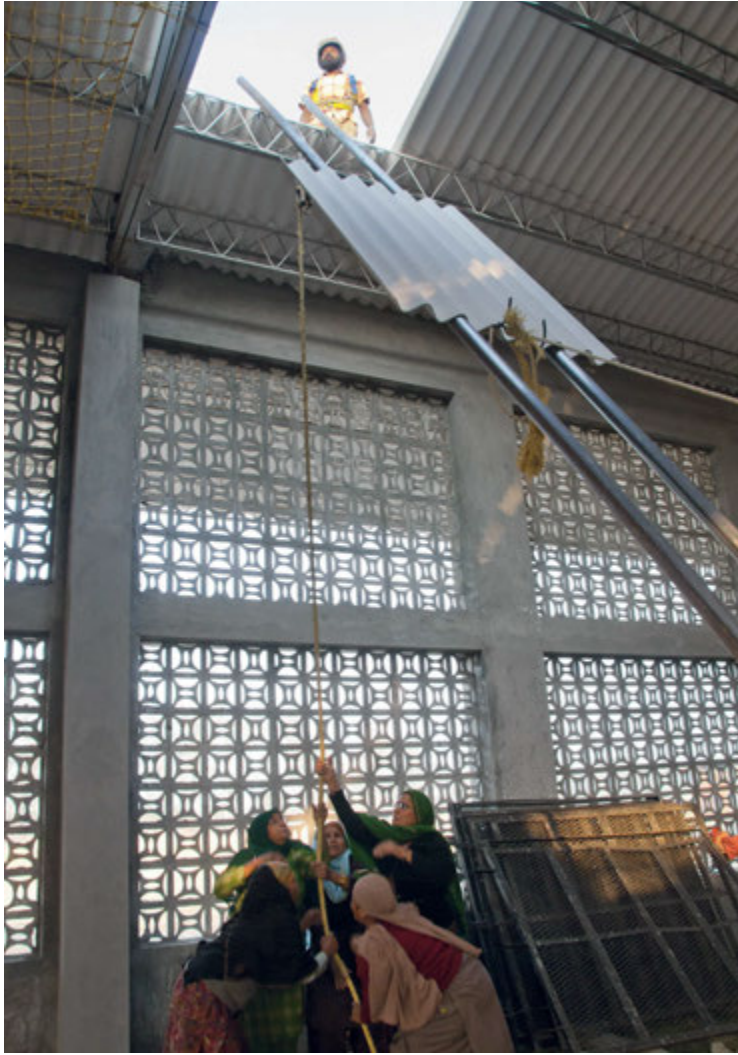
मंड-पंडाल के विस्तार का कार्य।

बड़े शैड जो आधुनिक स्पेस-फ्रेम तकनीक के अनुसार बनाए गए हैं, इनकी योजना और डिज़ाइन डेरे में ही तैयार किए गए हैं। स्पेस-फ्रेम के अलग-अलग हिस्से सेवादार पास के शहर में तैयार करते हैं, फिर डेरे में लाकर इन्हें जोड़कर जहाँ ज़रूरत हो वहाँ शैड बनाया जाता है।





मंड-पंडाल में मेटल रूफ के हिस्सों को जोड़ते हुए।



हवाई पट्टी पर हेंगर का निर्माण कार्य।

निर्माण कार्य



डेरा कई पहलुओं से अपने आप में विशेष है। इसकी एक विशेषता यह भी है कि यहाँ आनेवाली बहुत-सी संगत निर्माण कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती है। यह सेवा लगातार चलती है; कभी भी ऐसा नहीं हुआ जब इस कालोनी में सड़कें, मकान, दफ़्तर, स्नैक बार, हवाई पट्टी आदि बनाने का काम न चल रहा हो। इस कार्य की देखरेख क़ाबिल सेवादार ही करते हैं। हर आयु के स्त्री-पुरुष इकट्ठे मिलकर सेवा करते हैं। सेवा कार्य में चाहे धूल उड़ती हो या वह मुश्किल हो, उसमें कारीगरी की ज़रूरत हो या न हो, फिर भी संगत सेवा में आनंद लेती है, उनका उत्साह बना रहता है। ज़मीन की खुदाई से लेकर बहुत ऊँची पानी की टंकी बनाने तक हर कार्य, चाहे ट्रकों में माल ढोना हो, ठुकाई, रंगाई, बुलडोज़र चलाने की या तोड़-फोड़ करने की सेवा हो, सेवादार ये सब बड़े सेवा भाव से करते हैं और डेरे को सँवारते हैं।



















रोड़ी की सेवा



जब नए निर्माण कार्य के लिए पुरानी इमारतें तोड़ दी जाती हैं तो सेवादार रोड़ी बनाने के लिए पुरानी ईंटें तोड़ते हैं, जिसका इस्तेमाल सड़कें बनाने में और इमारतों की नींव में किया जाता है।







वर्कशाप

निर्माण कार्य के लिए ज़्यादातर सामग्री डेरे के अंदर ही तैयार की जाती है। टाइल फ़ैक्टरी में हाईड्रॉलिक प्रोसेस द्वारा कई तरह की अंदर और बाहर लगनेवाली टाइल के अतिरिक्त, सीमेंट के खंभे, सड़कों और फ़ुटपाथों के किनारे लगनेवाली टाइल, नालियों के ढक्कन, दीवारों की जालियाँ, दीवारों की टाइल और यहाँ तक कि संगत के शौचालयों के लिए मज़बूत गोलाकार छतें भी तैयार की जाती हैं। हाल ही में टाइल फ़ैक्टरी में डेरे के अपने बनाए प्राइमर और पेंट को मिलाने का कार्य भी शुरू हो गया है।





टाइल फ़ैक्टरी



ऊपर: जाली बनाना।

दायें: जाली के नमूने और जालियों से बनी दीवार।







फ़र्श की टाइल।

लकड़ी और धातु का कार्य (कारपैन्ट्री और मेटल वर्कशाप)

कारपैन्ट्री वर्कशाप में मरम्मत और फ़र्नीचर तथा अलमारियाँ बनाने का काम होता है। डेरे में इस्तेमाल की जानेवाली मेटल की कई चीज़ें भी डेरे में ही बनाई जाती हैं जैसे बाड़ के लिए तारें, नाकाबंदी के लिए पाइप, ग्रिल और खिड़कियों के लिए एल्युमिनियम के फ्रेम और चटखनियाँ आदि।





ईंटों का भट्ठा

डेरे का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यहाँ की ज़्यादातर इमारतों और अन्य निर्माण कार्यों के लिए ईंटें डेरे के अपने भट्ठे में तैयार होती हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि जिस ज़मीन पर डेरा बना है, वह उसी मिट्टी से बना है। उन्नीसवीं सदी के अंत में बाबा जैमल सिंह जी के समय में कुँआ बनाने के लिए डेरे में ईंटों का भट्ठा बनाया गया था। उन दिनों भट्ठे का मतलब था खुले में कोयले और लकड़ी को जलाकर ईंटें पकाना। ताप कम होने के कारण ईंटें पकाने में छः से आठ हफ़्ते लग जाते थे। अब इस भट्ठे को तकनीकी तौर पर नया रूप देकर नई जगह पर बनाया गया है जिससे इसकी क्षमता बहुत बढ़ गई है। अब लकड़ी के कोयले से भट्ठे में पूरे साल में एक करोड़ से भी ज़्यादा ईंटें तैयार होती हैं। यही ईंटें इमारतें, फ़ुटपाथ और सड़कें बनाने में इस्तेमाल की जाती हैं।





शामियाने रँगना



यहाँ पर कपड़ा रँगने और सिलाई का काम भी होता है। यहाँ सामान पारंपरिक ढंग से और आधुनिक मशीनों द्वारा तैयार किया जाता है, जैसे सुरक्षा के लिए जाल, स्क्रीन के लिए पर्दे और बिछाने के लिए चटाइयाँ।



सहायक सेवाएँ

डेरे में ऐसे कई विभाग हैं जो यहाँ की प्रबंध-व्यवस्था में सहायता करते हैं। इनमें चार प्रमुख क्षेत्र हैं: आनेवाली संगत की सहायता, डेरा-निवासियों की सहायता, निर्माण कार्य में सहायता, आर्थिक और क़ानूनी ज़िम्मेदारियों सहित डेरे की एक क़स्बे के रूप में पूरी-पूरी सहायता।







परचेज़ और सेंट्रल स्टोर

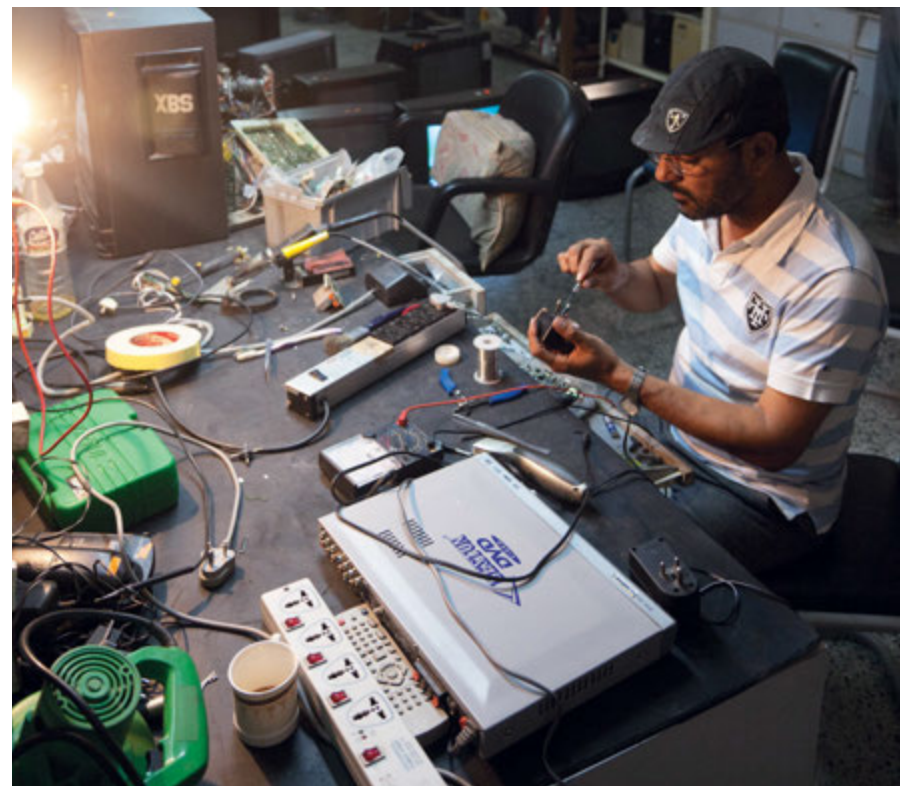
यहाँ का एक बड़ा परचेज़ डिपार्टमेंट है जो डेरे के अन्य डिपार्टमेंट के लिए और डेरा-निवासियों के लिए उपकरणों तथा दूसरी वस्तुओं की खरीदारी करता है (डेरा-निवासी इनकी क्रीमत खुद चुकाते हैं)।

पूरी कालोनी में अलग-अलग जगहों पर बनाए गए गोदामों और भंडार-घरों को सेंट्रल स्टोर से माल भेजा जाता है। इस सेंट्रल स्टोर में दफ़्तरों के लिए सामान, दूरसंचार उपकरण, मशीनों के पुर्ज़े और खाने-पीने की वस्तुओं से लेकर फ़र्नीचर तक रखा जाता है और सप्लाई किया जाता है।





ऊपर: बिजली का जैनेटर। अन्य बिजली संबंधी सेवाओं के अलावा डेरा जैनेटर की सुविधा भी देता है।



ऊपर: डेरा कंप्यूटर सेंटर में कंप्यूटर ठीक करते हुए।

हवाई अड्डा

डेरे के हवाई अड्डे पर छोटे जैट विमान तथा दूसरे हवाई जहाज़ भी उतर सकते हैं। निपुण सेवादार आधुनिक कंप्यूटरचालित कंट्रोल टावर द्वारा आने-जानेवाले हवाई जहाज़ों की व्यवस्था करते हैं।



टी.ए.सी. और कंप्यूटर विभाग

टेलीविज़न ऑडियो तथा कम्यूनिकेशंस (टी.ए.सी.)

डेरे की दूरसंचार सुविधाओं में डेरा-निवासियों के लिए टेलीफोन, इंटरनेट तथा सीमित केबल टेलीविज़न उपलब्ध हैं। सत्संग-पंडाल में प्रोजेक्टरों के साथ विशाल स्क्रीन लगाई गई हैं और सत्संग के लिए अति आधुनिक स्पीकरों की व्यवस्था है; इसके अलावा साथ-साथ अनुवाद करने के लिए उपकरण भी मौजूद हैं। इन्हें अपग्रेड करने और इनके रखरखाव पर भी पूरा ध्यान दिया जाता है। डेरे आनेवाली संगत को डेरे पहुँचने पर अपने मोबाइल फ़ोन गेट के बाहर ही जमा करवाने पड़ते हैं, इसलिए पूरे डेरे में जगह-जगह पब्लिक टेलीफ़ोन बूथ उपलब्ध हैं।

डेरा कंप्यूटर सेंटर (डी.सी.सी.)

आई. टी. सेवादार डेरे के कंप्यूटर नेटवर्क की व्यवस्था करते हैं और डेरे के अन्य डिपार्टमेंट के लिए सॉफ़्टवेयर बनाते हैं, जैसे कि संगत के लिए ऑन-लाइन बुकिंग के लिए सॉफ़्टवेयर, प्रकाशन विभाग, परचेज़ डिपार्टमेंट या फ़ाइनेंस डिपार्टमेंट आदि के लिए सॉफ़्टवेयर। डेरे के सभी डिपार्टमेंट डेरा कंप्यूटर नेटवर्क द्वारा एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।





बिजली पैदा करने के लिए मंड-पंडाल की छत पर चालीस एकड़ के फैलाव में फ़ोटोवॉल्टेक पैनल लगाए गए हैं।




पानी और कूड़े-कचरे की व्यवस्था

यहाँ की सबसे खास बात है कि लाखों की संख्या में संगत होने के बावजूद डेरे में साफ़-सफ़ाई बनी रहती है। सिंचाई के पानी के अलावा यहाँ बाक़ी का सारा पानी पीने योग्य है जिसे भूमिगत ट्यूबवैलों से पानी की 22 टंकियों में चढ़ाया जाता है। इन टंकियों से पानी आसपास के क्षेत्र में पाइपों द्वारा पहुँचाया जाता है। पानी की यह सप्लाई आपस में जुड़ी हुई है, अगर एक टंकी में पानी ख़त्म हो जाए तो दूसरी टंकी से उस क्षेत्र में पानी की सप्लाई कर दी जाती है। पीने का पानी डेरे के हर कोने में उपलब्ध है। कालोनी को हरा-भरा रखने के लिए पानी सीधे कुओं और ट्यूबवैल से आता है जो पूरे डेरे में मौजूद हैं। बारिश का पानी ब्यास दरिया में जाता है।

पीने के स्वच्छ पानी का वितरण।



ऊपर: पानी के पाइप बिछाते हुए।
नीचे बायें: साफ़ पानी पिलाते हुए।
नीचे दायें: सड़कों पर छिड़काव करते हुए।



यहाँ हर जगह शौचालय और स्नानगृह की सुविधा है जिसके कारण डेरे की साफ़-सफ़ाई बनी रहती है। डेरे को साफ़-सुथरा रखना सबसे बड़ी प्राथमिकता है जिसकी व्यवस्था सिविल इंजीनियर करते हैं। साफ़-सफ़ाई बड़े सरल तरीके से की जाती है, जिसमें असंख्य सेवादार जुटे रहते हैं। शौचालय, स्नानगृह और पीने के पानी के स्थानों की सफ़ाई रोज़ होती है। जल-मल के निकास की सफ़ाई के लिए सेवादारों को विशेष ट्रेनिंग दी जाती है। दो ऑक्सीडेशन पॉन्ड से खाद के लिए गलनशील कूड़ा-कचरा मिल जाता है जिसे बाद में डेरे के खेतों में इस्तेमाल किया जाता है।

कूड़े-कचरे की इस सुचारू व्यवस्था के कारण ब्यास दरिया में एक लीटर भी प्रदूषित पानी नहीं जाता, जबकि इसके किनारे लाखों की संख्या में संगत जमा होती है।

चूँकि डेरे में पानी सीधे ट्यूबवैल से आता है, इसलिए भूमिगत जलस्तर का ऊँचा और साफ़ होना ज़रूरी है। भूमिगत जलस्तर को ऊँचा रखने के लिए तकनीकी साधन अपनाए गए हैं। छतों से, नालियों और खुले स्थानों से प्राप्त होनेवाला बारिश का पानी तकनीकी साधनों द्वारा छनकर भूमिगत जल में मिल जाता है।

शौचालय साफ़ करते हुए
दायें: स्नानघरों की सफ़ाई और
कूड़े-कचरे का निपटारा।



लैंडस्केपिंग

डेरे की एक और खास बात यहाँ के हरे-भरे मैदानों की देखभाल है। सुबह से लेकर शाम तक, दिन-भर कई सेवादार सड़कों, फुटपाथ, बाड़, गोल-चौराहों और हरे-भरे मैदानों की साफ़-सफ़ाई करते हुए तथा कचरा समेटते हुए नज़र आते हैं। यँ भी कहा जा सकता है कि डेरे में ज़मीन पर गिरे हुए पत्तों की आयु कुछ घंटों से ज़्यादा नहीं होती।

पूरा साल जत्थों में आनेवाले सेवादार पेड़ों और झाड़ियों की काट-छाँट करते हैं और हरे-भरे मैदानों की सिंचाई और घास कटाई करते हैं। डेरे के इन सुंदर हरे-भरे मैदानों की देखभाल कभी न ख़त्म होनेवाली सेवा है।

डेरे का सुंदर तथा हरा-भरा प्राकृतिक दृश्य बड़ा मनमोहक है। यहाँ उगाए गए पौधे ज़्यादातर साधारण क्रिस्म के और उपयोगी हैं। खुले मैदानों में घास लगाने से मिट्टी नहीं बहती और संगत को आराम करने और बच्चों को खेलने की जगह भी मिल जाती है। सत्संग के लिए पैदल जानेवाली संगत को रास्ते में पेड़-पौधों की छाया मिलती है जिससे यह दूरी सुखद सैर में बदल जाती है। पेड़-पौधे लगाने से ढलान वाली ज़मीन मज़बूत हो जाती है तथा संगत की भारी भीड़ को नियंत्रित करने में नाकाबंदी का भी काम करती है; घास, सदाबहार झाड़ियों और लताओं से भी इस काम में सहायता मिलती है।

सार रूप में कह सकते हैं कि डेरे की इमारतों (शानदार सत्संग-घर को छोड़कर) के बजाय यहाँ के छायादार पेड़ों, मखमल जैसी घास, जगह-जगह हरे पेड़ों के बने छत्र और चटकीले रंग के बुगनविला के फूलों की याद हमारे मन में ताज़ा बनी रहती है।



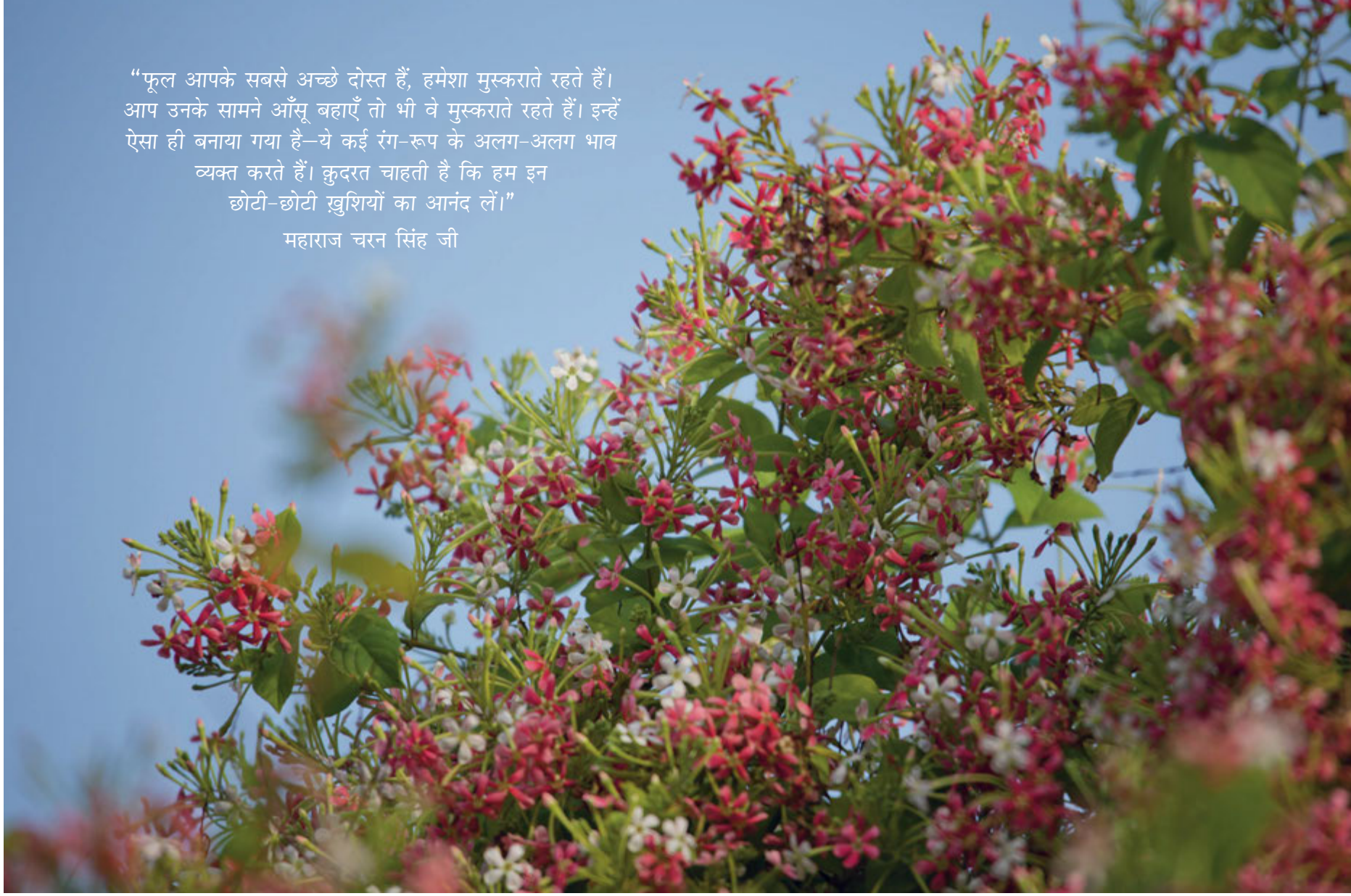






“फूल आपके सबसे अच्छे दोस्त हैं, हमेशा मुस्कराते रहते हैं।
आप उनके सामने आँसू बहाएँ तो भी वे मुस्कराते रहते हैं। इन्हें
ऐसा ही बनाया गया है—ये कई रंग-रूप के अलग-अलग भाव
व्यक्त करते हैं। कुदरत चाहती है कि हम इन
छोटी-छोटी खुशियों का आनंद लें।”

महाराज चरन सिंह जी







हरियाली के लिए घास लगाते हुए।

डेरे की छोटी-सी नर्सरी में लाखों पौधे तैयार किए जाते हैं। खेतों की तरह यहाँ की नर्सरी की देखरेख भी कुशल सेवादार करते हैं; हालाँकि सिंचाई, बीजों का संग्रह, पौधों को लगाने, बीजों के सुखाने, ज़मीन तैयार करनेवाले ज़रूरी काम अन्य सेवादार करते हैं। डेरे में सभी पेड़-पौधे उपयोगी होने के साथ-साथ सुंदर भी हैं। यहाँ भरपूर मात्रा में लगे पेड़-पौधे और फूल मन को शांति और आनंद देते हैं, इनसे माहौल खुशनुमा बना रहता है। पंजाब में दूरदराज़ का धूलभरा इलाक़ा कहलाने वाला यह डेरा हरियाली के कारण अब एक सुंदर, खुशबू से भरा मनमोहक स्थान बन गया है।













डेरे के कृषि फ़ार्म

डेरे में 1250 एकड़ ज़मीन पर खेती की जाती है। यहाँ कई तरह की सब्ज़ियाँ, गेहूँ, दालें और गन्ने आदि की खेती के अलावा फलों के बगीचे भी हैं जहाँ मधुमक्खियाँ पालकर शहद निकाला जाता है। खेतीबाड़ी के नए-नए तरीक़े इस्तेमाल किए जाते हैं जिनमें दो फ़सलों को एक साथ उगाने का तरीक़ा भी शामिल है। कालोनी में कुछ मात्रा में औषधीय पौधे भी उगाए जाने लगे हैं। पेड़ लगाने का काम और जलाने की लकड़ी के लिए पेड़ों की कटाई का काम भी लगातार चलता है। डेरे में पेड़-पौधे लगाने का फ़ायदा यह भी है कि पेड़ों की जड़ें मिट्टी को बहने से रोकती हैं।

डेरे में बिकनेवाले बहुत-से फल और सब्ज़ियाँ डेरे के अपने खेतों में उगाए जाते हैं जिससे डेरे के आत्मनिर्भर होने का परिचय मिलता है। जहाँ तक हो सके ये सारे कृषि-उत्पाद रासायनिक खाद या कीटनाशकों के बिना ही उगाए जाते हैं। डेरे में अनाज और दालों की पैदावार में भी कम से कम रासायनिक खाद इस्तेमाल की जाती है। वर्मीकल्चर यानी केंचुओं द्वारा खाद तैयार करने के प्रयोग पर भी विचार किया जा रहा है।





फ़सल की पैदावार





डेरे में कृषि भूमि को अलग-अलग हिस्सों में बाँटा गया है। इनकी ज़िम्मेदारी जत्था सेवादारों पर है जो अलग-अलग जगहों से आते हैं जैसे अमृतसर, गुरदासपुर, लुधियाना, मोगा, पटियाला, हरियाणा आदि।



खेतों में गन्ने की कटाई।





बायें: अलग-अलग फ़सलों की कटाई और बुआई।
ऊपर: सब्ज़ियाँ धोते हुए।



14 16

डेरें में बर्फ बनानेवाली फैक्टरी भी है। यहाँ कई मंज़िलों वाला कोल्ड-स्टोर है जहाँ आलू, सेब और ऐसी कई चीज़ें रखी जाती हैं जिनके खराब होने का खतरा रहता है। बर्फ बनाने की प्रक्रिया देखने योग्य है। यहाँ फर्श पर आयताकार (2 फुट लंबाई, 3 फुट चौड़ाई और 4 फुट गहराई वाले) टब रखे गए हैं जिनमें ठंडे खारे पानी की संचार तकनीक द्वारा बर्फ बनाई जाती है। ऊपर से क्रेन एक-एक करके इन टबों को उठाती है और पास खड़ी गाड़ी में रखती जाती है ताकि उसे प्रयोग के लिए ले जाया जा सके।



गाथा जारी है



“डेरे का इतिहास वास्तव में उन महान संत-महात्माओं की जीवन-गाथा है जिनके प्रेम और दया, परिश्रम और समर्पण से इस जगह का विकास हुआ है। यह जगह जो कभी वीरान थी, वही आज शांति और सुंदरता का फलता-फूलता केंद्र है।”

दीवान दरियाई लाल कपूर, धरती पर स्वर्ग



डेरा केवल डेरा-निवासियों का ही नहीं है, बल्कि उनका भी है जो यहाँ सतगुरु के दर्शन, सत्संग और सेवा के लिए आते हैं। हुजूर महाराज चरन सिंह जी कहा करते थे कि डेरे में न कोई मेहमान है और न कोई मेज़बान—डेरा तो सभी का है। यह एक ऐसी जगह है जहाँ लोगों में एक दूसरे के प्रति प्रेम-भाव है। डेरा इस बात की एक शानदार मिसाल है कि प्रेम और आपसी तालमेल से सब कुछ हासिल किया जा सकता है। निःसंदेह जब तक यहाँ देहधारी सतगुरु मौजूद रहेंगे, यह गाथा जारी रहेगी।

देहधारी सतगुरु की मौजूदगी डेरे का आधार है जो इस बात को स्पष्ट करता है कि किस तरह लोगों का हुजूम एक साथ काम करते हुए मिल-जुलकर रहता है। डेरे के सुंदर वातावरण का श्रेय पिछले पाँच संत-सतगुरुओं को है, जिन्होंने डेरे को ही अपना घर बनाया और इस उथल-पुथल भरे संसार में इसे शांति का ऐसा शरण-स्थल बना दिया जहाँ उनकी संगत सेवा कर सकती है और सच्चा और आध्यात्मिक जीवन जी सकती है।





यहाँ ऐसा कुछ भी नज़र नहीं आता जिसे अनावश्यक रूप से केवल दिखावे के लिए सजाया गया हो। डेरे का अपना ही सौंदर्य है और इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता। परंतु यह सरल सौंदर्य किसी मक़सद से जुड़ा है। अगर यहाँ कोई इमारत उपयोगी नहीं रहती तो उसे बिना किसी हिचकिचाहट के गिरा दिया जाता है और उसकी जगह ज़रूरत के मुताबिक़ नया निर्माण कार्य शुरू हो जाता है। लेकिन इसके साथ ही डेरे के इतिहास का अपना महत्त्व है, यहाँ गुज़रे हुए सतगुरुओं की विरासत का पूरा सम्मान किया जाता है।





डेरे के विस्तार का सिलसिला जारी है और समय के अनुसार यहाँ बदलाव आता रहा है। बेशक यह सिलसिला विकास और लगातार होनेवाले परिवर्तन से संबंधित है, लेकिन जहाँ तक प्रेम, शांति और आपसी तालमेल के माहौल की बात है, उस माहौल में कोई बदलाव नहीं आया है। इसी तरह यहाँ के संत-सतगुरुओं के उपदेश में भी कोई परिवर्तन नहीं आया है। यहाँ हमेशा एक ही बात पर बल दिया जाता रहा है और आगे भी दिया जाता रहेगा कि हर रोज़ भजन-सुमिरन करके, सत्संग और सेवा द्वारा अपने अंदर ही परमात्मा से मिलाप किया जा सकता है। इसी लिए जो भी डेरे में आता है, उसे प्रेम से इस मार्ग पर चलने से एक अनोखी आंतरिक शांति का अनुभव होता है।





महाराज सावन सिंह जी (ऊपर) और महाराज जगत सिंह जी (दायें) संगत के साथ।

“जब तक पत्थर पानी में पड़ा है,
वह ठंडा रहेगा और कम से कम
सूरज की तपिश से तो बचा ही रहेगा।”

महाराज सावन सिंह जी



“परमात्मा दीन-दुखियों से प्रेम करता है। किसी का दिल मत दुखाओ, उसमें परमात्मा रहता है।
जो किसी का दिल दुखाएगा उसके लिए स्वर्ग का द्वार हमेशा बंद रहेगा।
हमेशा प्रेम-प्यार और निःस्वार्थ भाव से भरे वचन बोलो।”

महाराज जगत सिंह जी



महाराज चरन सिंह जी

गुलाब का फूल

“आप सब जानते हो कि हुज़ूर को गुलाब के फूल बहुत प्यारे लगते थे।
आप सब उनके गुलाब के फूल हो और वे मुझे अपने बगीचे की
और अपने गुलाब के फूलों की देखभाल करने के लिए
माली की सेवा बख़्श गए हैं।”

बाबा गुरिन्दर सिंह जी

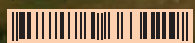




मौजूदा सतगुरु लंगर में सेवादारों को दर्शन देते हुए।



Sahej ki Saugat
(Hindi)



ISBN 978-81-8466-312-9